पृथ्वी

गृह पत्रिका 2024—25

चतुर्थ संस्करण—2025

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र,
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, तिरुवनंतपुरम-695011
दूरभाष 0471 2511502, 2511532 फैक्स 0471 2442187

संस्थापक, सेस, केरल

सी. करुणाकरन

6 मई 1917 – 28 मई 1999

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

गृह पत्रिका 2024–25

निदेशक

प्रो. एन. वी. चलपति राव

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र, आक्कुळम, तिरुवनंतपुरम

रा पृ वि अ कें

NCESS

संपादक मंडल

प्रो. एन. वी. चलपति राव
निदेशक – अध्यक्ष

डॉ. कुमार बटुक जोशी
वैज्ञानिक डी – रा. भा. का. अधिकारी

श्री डी. पी. मारेट
वरिष्ठ प्रबंधक – सदस्य सचिव

सुश्री अलका गोंड
वैज्ञानिक सी – सदस्य

श्री रजत कुमार शर्मा
वैज्ञानिक सी – सदस्य

डॉ. उण्णिकृष्णन सी. के.
वैज्ञानिक डी – सदस्य

डॉ. प्रजित ए.
वैज्ञानिक सी – सदस्य

श्रीमती रेश्मा के.
वैज्ञानिक सहायक ग्रेड बी – सदस्य

श्रीमती लक्ष्मी जी.
वैज्ञानिक सहायक ग्रेड ए – सदस्य

श्रीमती लावण्या एस.
हिंदी टंकक

संकलनकर्ता

विजयलक्ष्मी वी. यु.
हिंदी अनुवादक (अनुबंध)

संपादक

श्री डी. पी. मारेट
वरिष्ठ प्रबंधक

प्रकाशन

हिंदी अनुभाग
राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र,
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, तिरुवनंतपुरम–695011
दूरभाष 0471 2511502, 2511532 फैक्स 0471 2442187

प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा हिंदी भाषा पर कहे गए उद्धरण

❖ **"हिंदी वह कड़ी है जो भारत को एकजुट कर सकती है।"**

"हिंदी ही एक भाषा है, जो भारत में सर्वत्र बोली और समझी जाती है।"

"हिंदी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है।" – सर जॉर्ज ग्रियर्सन

ब्रिटिश भाषाविद् सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने भारतीय भाषाओं का व्यापक अध्ययन किया और लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया का नेतृत्व किया। इन्होंने हिंदी सहित कई भारतीय भाषाओं को वर्गीकृत किया और प्रलेखित करने में मदद की।

❖ **"हिंदी केवल भाषा नहीं है; यह भारत की पहचान है।"** – विलियम कैरी

ब्रिटिश मिशनरी और भाषाविद् विलियम कैरी ने भारतीय भाषाओं के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होंने हिंदी में धार्मिक ग्रंथों का अनुवाद किया और मुद्रण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया।

❖ **"संस्कृत माँ, हिंदी गृहिणी और अंग्रेजी नौकरानी है।"** – डॉ. फादर कामिल बुल्के

बेल्जियन जेसुइट पादरी और हिंदी के प्रसिद्ध विद्वान डॉ. फादर कामिल बुल्के ने हिंदी और संस्कृत का गहन अध्ययन किया और हिंदी शब्दकोश एवं साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

❖ **"हिंदी का पौधा दक्षिण वालों ने त्याग से सींचा है।"** – शंकरराव कप्पीकेरी

❖ **"विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।"** – वाल्टर चेनिंग

❖ **"मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्ज़त करता हूँ, पर मेरे देश में हिंदी की इज्ज़त न हो, यह मैं सह नहीं सकता।"** – आचार्य विनोबा भावे

❖ **"जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।"** – डॉ. राजेंद्र प्रसाद

❖ **"राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।"** – महात्मा गांधी

❖ **"हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है।"** – महात्मा गांधी

अनुक्रमणिका

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
सिर्फ एक	8
गिरगिट का रंग	9
चूड़ी का टुकड़ा	10
पराशक्ति की प्रतिध्वनि	11
दोस्ती की कीमत	12
मृत्यु	14
राष्ट्रीय एकता का माध्यम हिंदी	16
मज़बूत महिला, स्वस्थ भविष्य	18
राष्ट्र निर्माण में युवाओं का महत्त्व	20
भ्रष्टाचार पर एक प्रहर	21
हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए सहायक ई–टूल्स	23
സായന്തനം	25
പക	36
സന്തോഷത്തിന്റെ പാത	30
विश्व हिंदी दिवस 2024	33
हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा 2024	34
हिंदी पखवाड़े के तहत आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण	35
वर्ष 2024 के दौरान संस्थान में आयोजित अन्य गतिविधियाँ	40
एनसेस के कर्मचारियों के बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र	44

एनसेस के नए निदेशक महोदय प्रो. एन. वी. चलपति राव जी का पदधारण

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार
NATIONAL CENTRE FOR EARTH SCIENCE STUDIES
Ministry of Earth Sciences, Govt. of India

यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष और गर्व का विषय है कि राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र की हिंदी गृह पत्रिका **'पृथ्वी'** का चौथा संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। संवैधानिक प्रावधान अनुच्छेद 343(1) के अनुसार हिंदी संघ की राजभाषा है और हम राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए प्रतिबद्ध हैं। एनसेस के कर्मचारियों को उनकी मातृभाषा के अतिरिक्त हिंदी के प्रति रुचि एवं उनकी रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए यह पत्रिका विशेष अवसर प्रदान करती है। यह पत्रिका न केवल हमारे संस्थान की गतिविधियों और उपलब्धियों को प्रदर्शित करती है, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में भी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अतः मुझे विश्वास है कि यह संस्करण आपके लिए पहले के संस्करणों से भी अधिक जानकारीपूर्ण और प्रेरणादायक रहेगा। मैं इस पत्रिका को सफल बनाने में योगदान देने वाले सभी सहकर्मियों और लेखकों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ तथा संवैधानिक नियमों के अन्तर्गत क्षेत्रीय भाषा के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के कार्यालयीन प्रयोग को बढ़ाने एवं प्रचार–प्रसार में हम सबके सामूहिक प्रयासों एवं सहयोग की आशा करता हूँ।

हिंदी गृह पत्रिका **'पृथ्वी 2024–25'** के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

एन.वी. चलपति राव

प्रो. एन. वी. चलपति राव
निदेशक, एनसेस

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार
NATIONAL CENTRE FOR EARTH SCIENCE STUDIES
Ministry of Earth Sciences, Govt. of India

यह हमारे संस्थान के लिए गर्व का विषय है कि हिंदी पत्रिका का चौथा संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। पिछले संस्करणों की सफलता और आपके उत्साहवर्धन ने हमें इस अंक को और भी बेहतर बनाने की प्रेरणा दी। इस पत्रिका में न केवल संस्थान की उपलब्धियों और गतिविधियों को शामिल किया गया है, बल्कि हिंदी भाषा को बढ़ावा देने वाले लेख भी प्रस्तुत किए गए हैं। हमें विश्वास है कि यह पत्रिका आपको उपयोगी जानकारी प्रदान करेगी और हिंदी भाषा के प्रति आपके लगाव को और गहरा करेगी।

मैं सभी लेखकों, संपादकों और अन्य सहयोगियों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को एक सार्थक रूप देने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आपका समर्थन और सहभागिता ही हमारी सफलता का आधार है। सभी रचनाकारों को और इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

डी.पी.मारेट

डी. पी. मारेट
वरिष्ठ प्रबंधक, एनसेस

सिर्फ एक

प्रो. एन. वी. चलपति राव
निदेशक

सिर्फ एक कुसुम से, बनती है सारी बगिया,
सिर्फ एक तुरु से, छा जाती है हरियाली।

सिर्फ एक कोयल की कूक, लाती है ऋतु वसंत की बहार,
सिर्फ एक सितारा, बन जाता है कश्ती का रहनुमा।

सिर्फ एक मुस्कान से, हो जाती है दोस्ती,
सिर्फ एक स्पर्श जगाती है, हम में चेतना।

सिर्फ एक दिये की रोशनी, मिटा सकती है अंधेरे को,
सिर्फ एक सूर्य की किरण, प्रकाशित करती है सारे जहाँ को।

सिर्फ एक गीत, पिघला सकता है पत्थरों को,
सिर्फ एक दिल ही, समझ सकता है सच्चाई की दास्तान।

सिर्फ एक हँसी, दूर करती है उदासी को,
सिर्फ एक शब्द, प्रभावित करता है उदासी को।

सिर्फ एक आशा ही, जगाती है उत्साह को,
सिर्फ एक कदम से, शुरु कर सकते हैं मंज़िल के सफर को।

सिर्फ एक लकीर से, बन जाती है तस्वीर,
सिर्फ एक अंक, बदल देता है विद्यार्थी की तकदीर।

सिर्फ एक महती, बदल सकता है देश के भविष्य को,
सिर्फ एक परमाणु, मिटा सकता है सारी दुनिया को।

सिर्फ एक महात्मा ही, जगा सकता है हम में स्वाभिमान,
सिर्फ एक सत्य ही, बनता है हज़ार असत्यों से महान।

सिर्फ एक ज़िंदगी, बदल सकती है जीवन के मूल को,
दोस्तो, ये केवल एक, केवल एक अंक बदल सकता है आपकी ज़िंदगी को।।

गिरगिट का रंग

अलका गोंड
वैज्ञानिक सी

गिरगिट बोला गिरगिट से,
तुमने रंग न बदला आज !!
गिरगिट बोला, सोचा तो था...
नीले अम्बर सा बन जाऊँ,
फिर सोचा पत्ती सा होऊँ।

ठुमक – ठुमक जो बढ़ा आगे मैं,
झूम उठा कि मेघ ही हो जाऊँ,
पर ना जाने क्यों मन मेरा उदास।

आज ठहरता ना एक रंग पर,
कहीं सुना जो किसी को कहते,
हम तो मानव नहीं रंग बदलते...
घड़ी दो घड़ी छाया ले लें,
धूप सही न जाए तन पे।

छुपा कहीं वहीं उसी पेड़ पर,
देख रहा था मैं शाख़ से लिपटे,
थोड़े पेड़ यहाँ के काटूँ,
बाक़ी काटूँगा कुछ दूर चलके।

वहाँ घनी छाया थोड़ी है,
नहीं थकूँगा मैं श्रम करके,
बोल उठा वो पथिक खड़ा हो,
लिए कुल्हाड़ी आगे बढ़ा वो,
सहम गया फिर मैं देख कर ये,
भूल गया तब रंग बदलने !!!

लगा सोचने आज वहाँ मैं,
रंग बदलना होता क्या है ????
यह सुन बोला दूजा गिरगिट,
बदला रंग किसी और ने आज,
लिए उदास से अपने चेहरे,
निकल पड़े दोनों अपने काज।

चूड़ी का टुकड़ा

लक्ष्मी जी.
वैज्ञानिक सहायक ग्रेड ए

हँसते–हँसते लुक्का छुप्पी में
भाग रही थी उससे दूर
वृक्ष लताओं की शीतलिमा में
खो गये मेरी चूड़ी के टुकड़े।

हो गया दिल सूना–सूना
जब सच में पिया दूर हो गया
पर उनको मुझसे ज्यादा
देश की रक्षा प्रिय था।

उनकी आवाज़ जब सुनती थी
मन ही मन मैं नाचती थी
पर अधूरी लगी सारी बातें
जब सताती थी मुझे उनकी यादें।

इंतज़ार को खत्म करके
एक दिन वह आया, लेकिन
मैं न पा सकी वह मुस्कान
और न प्रेम भरी आँखें।

रोते–रुलाते लुक्का छुप्पी में
चला गया वह मुझसे दूर
व्यथा की अंधेरे में
खो गये मेरी चूड़ी के टुकड़े।

पराशक्ति की प्रतिध्वनि

मधुमिता,
पुत्री, प्रो. एन. वी. चलपति राव,
निदेशक, एनसेस

जब वह चलती हैं, धरती आनंदित हो उठती है,
उनके कमल चरणों को अपनी गोद में थाम लेती है,
मानो सृष्टि की धड़कन उन्हीं से स्पंदित हो।
उनके नूपुर केवल झंकार नहीं करते—वे गाते हैं,
ब्रह्मांड में नादस्वरम् के शाश्वत स्वर की भांति गूँजते हैं।

उनकी दृष्टि अनंत आकाश से भी गहरी है,
जिसमें सौ माताओं का स्नेह भी समा जाए तो भी कम पड़े।
भटकों के लिए वे प्रकाश हैं, पीड़ितों के लिए संजीवनी,
करुणा का वह निर्झर, जो हर व्यथा को हर ले।

उनकी शक्ति ही लोकों को संभालती है,
उनका तेज ही सम्पूर्ण सृष्टि का आधार है।
जो एक बार उन्हें देख ले, वह निःशब्द रह जाए।
उस अनंत ज्योति, शिव की प्रिय,
सृष्टि चक्रवर्तिनी महादेवी को मैं
हृदय, आत्मा और संपूर्ण समर्पण के साथ नमन करता हूँ।

दोस्ती की कीमत

लक्ष्मी जी
वैज्ञानिक सहायक ग्रेड ए

"जाग गई? कैसे हो?" एक नर्स ने मेरे पास आकर पूछा।
"ज़िंदा, लेकिन सुन्न।"
मेरे सूखे गले से कर्कश आवाज़ निकली।
उसने हँसकर कहा,
"ऐसी स्थिति में तुम ही ऐसे बोल सकती हो।
बिलकुल नहीं बदली, नेहा मनोहर।"
मेरे विवाह के पहले का उपनाम उसके मुँह से सुनकर मैं चौंक गयी।
कहीं इसको मैं जानती तो नहीं!
"मेरे पास अभी भी वह दस साल पुराना रेकॉर्ड बुक है।"
उसने रिकॉर्ड बुक कहा तो मेरी याद कहीं सालों पहले दौड़ती चली गयी।
दसवीं तक मैं मुंबई में पली बड़ी थी।
लेकिन मेरे राजनीतिज्ञ पिता की अकाल मृत्यु (या हत्या) के बाद माँ के छोटे गाँव में आना पड़ा।
वहाँ के स्कूल में मेरा दाखिला करवाया गया इस शर्त पर कि मैं किसी से ज़्यादा बात नहीं करूंगी।
ऐसे मेरा स्कूल जाना तो शुरू हुआ, लेकिन कोई दोस्त तो नहीं मिला।
फिर प्राक्टिकल शुरू हुआ।
मेरे पास के रोल नंबर थी, एक नेहा भास्कर, प्यारी सी एक लड़की जिसके माँ–बाप गरीब थे।
वह मेरे साथ एक टेबल पर थी, रसायन प्रयोगशाला में और हमें उपकरण और रसायन साझा करना पड़ा।
वह बहुत अच्छी थी, लेकिन मैंने अपनी दूरी बनाई रखी।
उसने मुझे अप्रिय समझा होगा, लेकिन मैं क्या करती! मुझे दोस्ती मना थी।
आखिरी परीक्षा का समय आ गया।
जब मैं रासायनिक प्रयोगशाला के बाहर खड़ी थी, तब किसी के रोने की आवाज़ सुनाई।
वहां बरामदे की एक स्तंभ के पीछे नेहा छुपके रो रही थी।
"क्या हुआ?" मैंने पूछा।
"कल बारिश थी ना।''
जब हम अपने घर से रिसाव के कारण पड़ोसी के घर में जा रहे थे तो मेरा रिकॉर्ड बुक भीग गया।"
उसने अपना भीगा रिकॉर्ड उठाकर दिखाया।
स्याही फैल गई थी, कुछ भी नहीं पढ़ पा रही थी उसमें।
"अब मैं क्या करूँ!''

मेरे परिवार की आशा की किरण थी मैं।

जल्दी से पास होकर कुछ बनना चाहती थी, अपने बलबूते पर।

अब क्या करूँ!

मेरा एक साल व्यर्थ हो गया!"

तब मास्टर जी ने मेरा नाम पुकारा, परीक्षा के लिए।

लेकिन मेरे दिमाग में तब उसके आँसू पोंछने का एक उपाय उमड़ा।

"उस दिन तुमने अपना रिकॉर्ड बुक मुझे दिया, याद है? नेहा मनोहर बनी नेहा भास्कर और 102 बनी 103।

तुम्हारी वजह से मुझे अपना एक साल नहीं गंवाना पड़ा और मैं अब यहां खड़ी हूँ, अपने बलबूते पर।"

उसने मेरा हाथ पकड़कर मुस्कुराकर कहा–

लेकिन तुम परीक्षा के बाद अचानक गायब हो गयी थी।

मुझे नर्सिंग में दाखिला मिलने पर मैं आयी थी तुमसे मिलने।

पर तुम कहीं नहीं मिली।"

मैंने कुछ बोलने की कोशिश की, लेकिन आवाज़ नहीं निकल रही थी।

"अच्छा, अब तुम आराम करो।

हमें अभी समय मिलेगा बातचीत करने के लिए, मेरी दोस्त।"

उसने धीरे से मेरा हाथ दबाया और चली गयी।

"दोस्त।"

मैं फुसफुसायी और चेहरे पर एक मुस्कान लेकर नींद में डूब गई।

मृत्यु

अलका गोंड,
वैज्ञानिक सी

जीवन का ऐसा कौन सा क्षण है, जब हम मृत्यु की तरफ़ नहीं बढ़ रहे हैं....तो फ़िर मृत्यु से इतना भय क्यों? मृत्यु को लेकर इतनी भ्रांतियाँ क्यों? क्या मृत्यु को सहजता से नहीं लिया जा सकता?? मृत्यु से भयभीत रहने का अर्थ है कि हम सत्य से बहुत डरे हुए रहते हैं। सत्य से डर तो केवल अहंकार को ही होता है, क्योंकि अहंकार झूठ होता है, उसे स्वयं को अस्तित्वमान मानने में, सर्वशक्तिमान मानने में स्वयं की हीनता दिखती है, जब मृत्यु जैसा सत्य उसे दर्पण दिखाता है। हम स्वयं में कितने ज्यादा अहंकारी हैं, ये इस बात से भी स्पष्टतः समझा जा सकता है कि हम स्वयं की मृत्यु को लेकर कितने भयभीत और जीवन को लेकर कितने लालायित रहते हैं। हम सब मिट्टी (जड़) ही हैं, केवल चेतना आ गयी है इस मिट्टी को थोड़ी सी, अन्य जीव (मिट्टी) की तुलना में, अन्यथा एक कुर्सी और हम में कोई भेद नहीं रह जाता मृत्यु के बाद। एक क्षण में प्रकृति हमें सर्वशक्तिशाली, प्रभावशाली मनुष्य से कुर्सी की तरह निर्जीव बना सकती है और बना देती है, कुछ भी हमारे हाथ में नहीं रह जाता।

देखा जाए तो हम सब अपने जीवन से प्रति क्षण घटाते हुए मृत्यु की दिशा में ही निरंतर चल रहे हैं। जिसे हम अपना भविष्य कहते हैं, वास्तव में तो वो मृत्यु की और समीपता को ही दर्शाता है। हमारे बीस, पच्चीस वर्षों के आगे की योजना, धन एकत्र करने की कामना, स्वयं के नाम, यश, इत्यादि के लिए हम जितनी भी प्रतिस्पर्धा करते हैं, देखा जाए तो उस समय तक हमारा जीवन और अधिक घट चुका होता है, तो क्या ये सत्य नहीं; कि हम सब अपने वर्तमान में, जो ठीक अगले ही क्षण भूत/अतीत बन कर मिट जाता है, उसको जैसा बनाकर छोड़ देते हैं, वही सत्य रह जाता है। तो फिर, हम क्यों अपनी ही जीवन लेखनी को मलिन स्याही से भरते जाते हैं, जिसमें से केवल ईर्ष्या, अहंकार, लालच, छल–कपट इत्यादि से स्वयं के ही जीवन पर अपने स्याह मन की छाप छोड़ते जाते हैं। जब सभी की गति एक ही दिशा में तय है, तो क्या हो यदि हम अपने आपको इन मलिनताओं से दूर ही रखें।

"दूसरे" लोग हमारे प्रति क्या बैर भाव रखते हैं, ये भी तो इसी पर तय होता है कि उनकी स्वयं की चेतना उनसे क्या करवाती है। हम अपनी चेतना को तो ऊँचा स्थान दे सकते हैं, इतनी ज़िम्मेदारी तो स्वयं के प्रति प्रत्येक मनुष्य का धर्म है। प्रत्येक व्यक्ति यदि "दूसरों" के स्थान पर स्वयं को ही इतना जिम्मेदार बना ले कि वो स्वयं की और अपने बच्चों की चेतना को कभी मलिन नहीं होने देगा, तो फिर "वो दूसरा" व्यक्ति बचेगा ही कहाँ कोई, हर कोई स्वयं में ही एक जागृत चेतना होगा। जब हम सब उस एक अंतिम सत्य को न तो बदल सकते हैं, न टाल सकते हैं और न ही उसे झुठला सकते हैं, तो ये इतना सुंदर क्यों नहीं हो सकता कि हम सब उस साझा निश्चित मंज़िल की तरफ़ सहयात्री बन कर, अपनी–अपनी यात्रा में सुंदर जीवन की लेखनी से सुगंधित छाप छोड़ते हुए हर शब्द लिखें। यदि कोई कुछ अधिक पा भी जाए, तो भी उसकी मंज़िल तो नहीं बदल जाएगी।

इतिहास में भी उन्हीं को सर्वोच्च स्थान मिला है, जिन्होंने अपनी चेतना का स्तर ऊँचा रखा और केवल उन्हीं के माध्यम से जगत् को कुछ लाभ भी हुआ है। कौरवों का पूरा जीवन पांडवों से प्रतिस्पर्धा करने में ही व्यर्थ गया, कदाचित उनके पास अधिक धन, सम्पदा, सिंहासन (स्वर्ण जड़ित), सुख–सुविधाएँ, भोग–विलास सब थे, किन्तु इतना कुछ मिलने के बाद भी उनकी चेतना का स्तर नहीं उठा, उनका अंतर्मन सदा ईर्ष्यालु ही रहा। भला ऐसे

जीवन को विश्व की सभी सुख–सुविधाएँ मिलकर भी क्या तृप्ति दे सकती हैं?? कौरव राजकुमारों के इतने छल–कपट, द्वेष–भाव, राजनीति करने के बाद भी प्रजा के हृदय का सिंहासन तो पांडवों ने ही जीता; और श्रीकृष्ण का गीता–अमृत भी उत्तम अर्जुन को ही मिला। समस्त विश्व के हित हेतु जो गीतामृत उपयोगी एवं आदर्श बना, वो स्वर्ण सिंहासन पर आसीन न तो धृतराष्ट्र को प्राप्त हुआ और न ही ताकतवर एवं दंभी कौरव राजकुमारों को। ऐसे में, उन्हें सब कुछ मिल कर भी कुछ नहीं मिला, और वहीं, सदैव अपने मूल्यों पर, सर्वजन के हित, सुख और संसार के कल्याण हेतु कष्ट सहने वाले, करुणा को सर्वोपरि रखने वाले पांडवों को वन में जीवन बिताते हुए भी सब कुछ मिल गया। उनके पास कौरवों के बराबर कुछ भी नहीं था भौतिक जगत का, किन्तु फिर भी उनके हृदय में करुणा थी, और जहाँ दूसरों के प्रति करुणा होती है, सरलता होती है, वहीं श्री कृष्ण वास करते हैं, और जहाँ श्री कृष्ण वास करते हैं, उनके पास ही मानवता बचती है, पोषित होती है। हृदय में शीतलता होती है, असीम शांति होती है, इस बात की, कि उनके कारण जगत के किसी दूसरे जीव को अनावश्यक प्रतिस्पर्धा, भय, छल–कपट की पीड़ा, सदैव हार–जीत की छीना–झपटी का कष्ट नहीं भोगना पड़ रहा। कौरवों को सत्ता अपनी चेतना से अधिक प्यारी थी, किन्तु मृत्यु के द्वार से तो वो भी नहीं बच पाए। मृत्यु तो पांडवों को भी आई, किन्तु उनकी चेतना और करुणा ने उन्हें सदैव कृष्ण का प्रिय भी बनाए रखा और अनंत काल तक के लिए जगत के सामने उदाहरण भी बना दिया, कि जिनको सत्ता, धन, नाम इत्यादि की लालसा नहीं रहती, वास्तव में वही सबसे उत्तम शासक, सत्तासीन होने की योग्यता रखते हैं। कौरव कितने भी प्रयास कर ले गए, सत्ता, राज–पाट इत्यादि भले ही भोगा, किन्तु किसी के भी हृदय में स्थान नहीं बना पाए।

व्यक्ति की चेतना ही उसे ऊँचा जीवन जीने की प्रेरणा देती है, स्पष्टता देती है, कि क्या वास्तविक धर्म है (जिसका आधार है, करुणा) और क्या दिखावे का। वास्तविक सत्ता तो इस दृष्टि से पांडवों को ही मिली, जिन्होंने धर्म का वास्तविक अर्थ समझा और उस पर ही टिके रहे, और स्वतः ही संसार के लिए प्रेरणा और उदाहरण बन गए। अंतर स्पष्ट था। पांडवों ने सदा स्वयं को एक उत्तम चेतना बनाने पर ध्यान दिया और कौरव पुत्रों ने सदा पांडवों से प्रतिस्पर्धा, छल–कपट में ऊर्जा व्यर्थ ही नष्ट करके अपना पूरा जीवन मलिन कर लिया। कदाचित उन्होंने जीवन को केवल एक यात्रा की तरह देखा होता और मृत्यु को एकमात्र सत्य जानकर अपनी यात्रा को सरल, शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल हृदय के साथ पूर्ण किया होता, तो उन्हें जीवन भर के अपने कर्मों के बारे में सोचकर, लज्जा नहीं आती।

मृत्यु एकमात्र सत्य है, और हम सब प्रकृति के उसी एक अंतिम उत्सव के आयोजन के भोजन हैं। इस सत्य को जो साथ रखकर प्रति क्षण जीता है, फिर वह स्वयं को अहंकारी और हृदय को मलिन नहीं करता; वरन् सरल एवं साफ़ हो जाता है, दूसरों के लिए कोई कपट भाव नहीं रखता, अपितु अपनी जीवन यात्रा को और अधिक करुणा की सुगंध एवं सौन्दर्य से पूर्ण करने के लिए प्रयास करता है, खुल कर जीता है, भयरहित होकर और प्रति क्षण कुछ नया सीखने को तत्पर, जीवन के प्रत्येक क्षण से सीखता है, और स्वयं को उत्तम बनाने में लगा रहता है, न कि कौरव पुत्रों की तरह अन्यों को कष्ट देने में।

आयु को अपना काम करने देना चाहिए, किन्तु मनुष्य का धर्म है कि वो अपनी चेतना को बेहतर बनाने में प्रयत्नशील रहे, क्योंकि उसकी चेतना के स्तर के कारण प्रकृति के अन्य प्यारे, निर्दोष, मासूम बच्चे, जिनमें हर एक दूसरा मनुष्य, पशु, पक्षी, पेड़, पौधे, पहाड़, नदियाँ, सागर, कीट–पतंगे सभी आते हैं, उन सबको हमारे मलिन मन से उपजे कर्मों, भावनाओं का कष्ट भोगना पड़ता है। इसीलिए, सदा मृत्यु को स्मरण में रखकर यदि हम अपना जीवन जीते हैं, तो वो हमें दूसरों के साथ दुर्भावना नहीं करने देता, और हमारा अंतर्मन भी शांत रहता है। मृत्यु को शाश्वत सत्य मान कर उसे स्वीकार करके जीने से ही जीवन सहज़ और सरल बन सकता है।

राष्ट्रीय एकता का माध्यम हिंदी

विजयलक्ष्मी
वी.यु, ॠहदी अनुवादक

'हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है'। यह पढ़कर आपको शायद लगता होगा कि हमारे राष्ट्र के लिए कोई राष्ट्रभाषा नहीं है, हिंदी केवल भारत का राजभाषा एवं संपर्क भाषा है। जब हमसे पूछा जाता है कि भारत का राष्ट्रीय खेल क्या है तो हम बोलेंगे कि 'भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी है'। लेकिन गूगल कहता है कि भारत का कोई आधिकारिक रूप से नामित राष्ट्रीय खेल नहीं है। फिर भी हम मानते है कि हमारे राष्ट्रीय खेल हॉकी है। लेकिन हम हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में मानने एवं अपनाने में क्यों नही तैयार है? आपको शायद लगता होगा कि हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी ही क्यों, हमारी मातृभाषा भी राष्ट्रभाषा बनने के लिए योग्य है। लेकिन इसका उत्तर यह है कि हिंदी किसी विशेष प्रदेश की भाषा न होकर संपूर्ण भारत की जनता के संपर्क की भाषा है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। केरल में मलयालम, तमिलनाडू में तमिल, कर्नाटक में कन्नड़, पंजाब में पंजाबी, हरियाणा में हरियाणवी, राजस्थान में राजस्थानी, बंगाल में बांग्ला, उत्तर प्रदेश में ब्रज, अवधी, पूरबी, कश्मीर में कश्मीरी, उर्दू आदि बोली जाती है। जब इन प्रदेशों के लोग बाहर जाकर दूसरे प्रदेश के लोगों से संपर्क करते है, तब वे हिंदी के माध्यम से ही उनका गुज़ारा चलता है। उनके व्यवहार की भाषा हिंदी ही होती है।

कबीरदास, मीराबाई, दयानंद, अमीर खुसरो, गांधी जी इन सबने हिंदी को सारे देश की भाषा जानकर अपनाया। स्वामी दयानंद जी, जिनकी मातृभाषा गुजराती है, कहा करते थे–

"हिंदी द्वारा सारे भारत को एकसूत्र में पिरोया जा सकता है।"

योगीराज अरविंद ने कहा था,

"भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिंदी के प्रचार द्वारा एकता स्थापित करने वाले व्यक्ति ही सच्चे भारतीय बंधु है।"

हिंदी के प्रसार के लिए महात्मा गांधी, जिनकी मातृभाषा गुजराती थी, ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा की स्थापना की। गांधी जी ने स्वतंत्रता

आंदोलन में हिंदी को भारत की एकता की भाषा कहा है। उन्होंने यह भी कहा था–

"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूँगा होता है।"

उन्होंने अपने समाचार पत्र 'यंग इंडिया' में बारंबार सावधान किया था कि हिंदी ही राष्ट्रभाषा बन सकती है उन्होंने लिखा है–

"हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित करने में एक दिन भी खोना देश को भारी सांस्कृतिक नुकसान पहुँचा है। जिस तरह हमारी आज़ादी को जबरदस्ती छीनने वाले अंग्रेज़ों की सियासी हुकूमत को हमने सफलतापूर्वक इस देश से निकाल दिया, उसी तरह हमारी संस्कृति को दबाने वाली अंग्रेज़ी भाषा को भी यहाँ से निकाल बाहर करना चाहिए।"

लाखों दक्षिण भारतवासियों ने भी हिंदी के प्रचार के लिए महान त्याग किया। हिंदी को राजभाषा घोषित करने कि प्रस्ताव रखने वाले प्रथम व्यक्ति दक्षिण भारतीय विद्वान श्री गोपालस्वामी अय्यंगर थे, जिनकी मातृभाषा तमिल थी। हिंदी भाषा के महत्त्व को देखकर संविधान में हिंदी को अपनाया था। 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा बनाने का संविधान सभा ने निर्णय लिया था। इस दिन के स्मरण में हम हर साल हिंदी दिवस मनाते है।

26 जनवरी 1950 को जब संविधान लागू हुआ तब संवैधानिक प्रावधान के भाग 5, 6, 17 लागू हुआ था। भाग 5 के अंतर्गत अनुच्छेद 120, भाग 6 के अंतर्गत अनुच्छेद 210 एवं भाग 17 के अंतर्गत अनुच्छेद 343 से लेकर 351 तक लागू हुआ था। उसमें सबसे महत्त्वपूर्ण अनुच्छेद 343 मे यह उल्लेख किया गया है कि संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंको का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा। (भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप से तत्पर्य 1, 2, 3, 4, 5...... से है।) हिंदी के विकास के लिए राजभाषा अधिनियम 08 मई 1963 को पारित किया गया था और राजभाषा नियम 17 जुलाई 1976 को लागू हुआ था। राजभाषा हिंदी का प्रचार प्रसार बढ़ाने का कर्तव्य अनुच्छेद 351 के तहत संघ को सौंपा गया था।

आज हिंदी करीब 30 करोड़ भारतवासियों की मातृभाषा और 40 करोड़ लोगों की दूसरी भाषा के रूप में बोली जाती है। ब्रिटन, अमेरिका, जापान, मॉरीशस, आदि देशों में हिंदी स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर तक पढ़ाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव बान की मून ने आठवें विश्व हिंदी सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए कहा कि 'हिंदी भाषा सहज सद्भाव की भाषा है।' हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी पहचान, गर्व और राष्ट्रीय एकता का सशक्त माध्यम है। इसके संरक्षण और प्रचार–प्रसार से हम न केवल अपने देश की विविधताओं को एकजुट रख सकते हैं, बल्कि अपनी संस्कृति को भी सहेज सकते हैं। हिंदी न केवल हमारी सांस्कृतिक विरासत है, बल्कि यह आने वाली पीढ़ियों के लिए राष्ट्रीय एकता का आधार भी है।

मज़बूत महिला, स्वस्थ भविष्य

अभिनव कुमार शुक्ला,
जेआरएफ

हर वर्ष 08 मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिन महिलाओं के सम्मान, संघर्षों और समानता के अधिकार को पहचान देने और समझने का दिन होता है। इस दिन को महिलाओं की समाज के प्रति जागरूकता और उनके अथक संघर्ष के रूप में पहचाना जाता है। समाज में या पूरे विश्व में स्वस्थ और मज़बूत महिलाओं का होना अति आवश्यक है। किसी देश का विकास तभी संभव है, जब उस देश की महिलाएँ सशक्त होंगी।

विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की मजबूती: जब हम मज़बूत महिला की बात करते हैं, तो हमें अक्सर शारीरिक मजबूती का खयाल आता है। हालांकि, ऐसा नहीं है। मजबूती की बात करें, तो शारीरिक, मानसिक और व्यावहारिक सभी इसमें शामिल हो जाते हैं। सबसे पहले हम मानसिक मजबूती की बात करना चाहेंगे। मानसिक मजबूती की शुरुआत उच्च शिक्षा से होती है। आजकल बहुत सारे स्थानों पर प्रारंभिक शिक्षा के बाद महिलाओं को उच्च शिक्षा के लिए बाहर नहीं भेजा जाता है, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में। यह महिलाओं की कमजोरियों का सबसे बड़ा कारण बन जाता है, जिससे वे मानसिक रूप से कमजोर महसूस करती हैं और शारीरिक कमजोरी स्वतः उत्पन्न होने लगती है।

जब हम शारीरिक कमजोरी की बात करते हैं, तो हमें उससे पहले उस जड़ तक पहुँचना चाहिए जहाँ से यह उत्पन्न होती है। मूलभूत शारीरिक आवश्यकता की कमी एक बड़ा अभिशाप है। अधिकतम ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े परिवार के कारण महिलाओं को पूर्ण रूप से पोषण नहीं मिल पाता है और महिलाएँ इस कमजोरी या लाचारी को खुलकर बता नहीं पाती हैं। इससे उनके शारीरिक संतुलन में धीरे–धीरे गिरावट आती है और बढ़ती उम्र के साथ उन्हें भविष्य में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

शारीरिक मजबूती का भविष्य में प्रभाव: शारीरिक मजबूती का सीधा प्रभाव महिला के देश पर पड़ता है। यदि महिलाएँ मज़बूत होंगी, तभी देश का विकास संभव है। आजकल पूरे विश्व में महिलाएँ हर दिशा में अपने कला और सामर्थ्य को प्रदर्शित कर रही हैं, चाहे वह खेल का क्षेत्र हो, अनुसंधान का हो, या देश की सुरक्षा का। महिलाएँ सुरक्षा के क्षेत्र में अपने आप को प्रदर्शित कर रही हैं क्योंकि वे शारीरिक रूप से मज़बूत और सशक्त हैं। जैसे–जैसे सशक्तिकरण का स्तर बढ़ रहा है, वैसे–वैसे हमारे देश की महिलाएँ देश के विकास में बढ़–चढ़कर हिस्सा ले रही हैं और खुद को श्रेष्ठ प्रस्तुत करने का प्रयास कर रही हैं।

महिलाओं की मजबूती का प्रभाव घर से लेकर देश के भविष्य तक: सबसे पहले हमें शुरुआत घर से करनी चाहिए। पुरुषों की तुलना में, अगर एक महिला घर में शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ होती है, तो परिवार पर उस महिला की मजबूती का प्रभाव साफ तौर पर दिखता और समझ आता है। वह महिला अपने मजबूती के कारण परिवार के संतुलन को बनाए रखती है और समाज को एक अच्छा उदाहरण देती है। वही महिला जब नौकरी, शिक्षा या अनुसंधान के क्षेत्र में होती है, तो देश को नई ऊँचाई और चमक देने का प्रयास करती है। आजकल हमारे देश की महिलाएँ, चाहे वे किसी भी क्षेत्र से जुड़ी हों, देश के उज्ज्वल भविष्य और चमक के लिए निरंतर प्रयास कर रही हैं। उदाहरण के तौर पर, डॉ. इंदिरा हिंदुजा ने टेस्ट–ट्यूब शिशु का आविष्कार किया और टेसी थॉमस ने देश के मिसाइल कार्यक्रम में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

महिला दिवस सिर्फ एक दिवस नहीं है, बल्कि यह महिलाओं को सम्मान, समानता और समाज के प्रति समान अधिकार देने का अवसर है। हमें महिलाओं को मानसिक, शारीरिक और आधिकारिक रूप से मज़बूत बनाना चाहिए ताकि देश का विकास अधिकतम तेज़ी से हो सके। यह सत्य है कि परिवार से लेकर देश का भविष्य तभी उज्ज्वल हो सकता है जब उस देश की महिलाएँ हर दृष्टि से सशक्त और मज़बूत हों। महिलाओं को हर दिशा में मज़बूत बनाना चाहिए, चाहे वह शिक्षा हो, स्वास्थ्य हो, या पर्यावरण।

नारी मज़बूत तो देश मज़बूत
नारी शक्ति को नमन!

राष्ट्र निर्माण में युवाओं का महत्त्व

अश्वती
वि. के., शोध छात्र

जब हम अपने राष्ट्र को देखते हैं, तो समझ सकते हैं कि युवाओं की संख्या बहुत बड़ी है। इसका महत्त्व यह है कि केवल संख्या ही नहीं, उनका योगदान भी महत्त्वपूर्ण माना जाता है। युवाओं का महत्त्व कई विभागों में देखा जा सकता है, जैसे विज्ञान, खेल, चलचित्र आदि। जब हम विज्ञान के संदर्भ में बात करते हैं, तो हमें पता चलता है कि आज हमारे राष्ट्र में युवा वैज्ञानिकों की संख्या बहुत बड़ी है और दुनिया के कई स्थानों में उनका नाम प्रसिद्ध हो रहा है। वैज्ञानिक उन्नति में वे कई प्रकार से योगदान दे रहे हैं। जब हम खेल के संदर्भ में बात करते हैं, तो हमारे मन में आईपीएल का नाम आता है। यह युवाओं की विजय है। जैसे प्रज्ञाननंदा ने शतरंज के क्षेत्र में हमारे देश का नाम विश्व में प्रसिद्ध किया है। विनेश फोगट, नीरज चोपड़ा आदि इसमें कुछ प्रमुख नाम हैं।

युवाओं का महत्त्व यह भी है कि उनके विचार, भावनाएँ आदि बहुत नए और आधुनिक होते हैं। वे बहुत सेक्युलर और लोकतांत्रिक हैं, और उनके योगदान से समाज को आगे बढ़ने का अवसर मिलता है। इसके लिए देश को कुछ कदम उठाने की आवश्यकता है। उनकी भावनाओं को प्रोत्साहित करने के लिए अच्छा पर्यावरण भी देना चाहिए। केवल बहुत अधिक युवाओं की संख्या ही नहीं चाहिए, बल्कि हमें सशक्त और ज्ञानपूर्ण युवाओं की आवश्यकता है। राष्ट्र निर्माण में युवाओं का मूल्य समझते समय हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हमारा राज्य उन्हें अच्छा पर्यावरण दे। हम अखबारों में पढ़ते हैं कि युवाओं के बीच शराब पीने और तंबाकू का उपयोग बढ़ रहा है। इसलिए देश का पहला कर्तव्य यह होना चाहिए कि वे इन आदतों से युवाओं को दूर रखें। कई देशों की तरह हमारे देश में भी नौकरी की समस्याएं बढ़ रही हैं। इसलिए कई युवा प्रारंभिक शिक्षा के बाद अन्य देशों की ओर जा रहे हैं। उनके पलायन का कारण सोचने का विषय है। युवा पैसे कमाने के लिए और बेहतरीन जीवनशैली के लिए विदेश जाते हैं, लेकिन यदि हमारे देश में अच्छे अवसर होते हैं, तो विदेश जाने वाले युवाओं की संख्या कम हो जाएगी और हमारे लोग अपने राष्ट्र के लिए काम करने लगेंगे।

हम यह नहीं कह सकते कि हमारे राष्ट्र में युवाओं के लिए कोई योजना नहीं है। सरकार द्वारा कई प्रकार की योजनाएँ चलाई जा रही हैं। नया व्यवसाय शुरू करने के लिए स्टार्टअप मिशन, बैंक लोन आदि जैसी योजनाएँ युवाओं को उपलब्ध हैं। आज के युवा किसी भी कार्य से डरते नहीं हैं, वे हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए प्रयासरत हैं। यह सब केवल विज्ञान और खेल में ही नहीं, बल्कि फिल्मों में भी देखा जा सकता है। हमारे देश के छात्र हर क्षेत्र में अपनी छाप छोड़ रहे हैं। इसलिए मैं कहना चाहूँगी कि सरकारी अधिकारियों द्वारा किए गए प्रयास अच्छे हैं। इसके अलावा, हर किसी को विभिन्न अवसर देने चाहिए और हमारे देश के विविधता को ध्यान में रखते हुए पिछड़े वर्ग के लोगों को आगे बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। जाति भेद के मुद्दों को इस अवसर पर नहीं सोचना चाहिए। जब सभी मिलकर आगे बढ़ेंगे, तो एक नए भारत का निर्माण हो सकेगा। युवा देश का भविष्य हैं, उन्हें प्रोत्साहित करें और देश का नाम हर जगह पर प्रसिद्ध करने का अवसर बनाएँ।

भ्रष्टाचार पर एक प्रहार

अजित एस., क्षेत्र सहायक

भारत अपनी विविध आदतों और मान्यताओं के कारण एक विशाल सांस्कृतिक संगम स्थान हैं। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी और महान संस्कृति है, उसका महत्त्व पूरे विश्व में फैला हुआ है। हमारे यहाँ अलग–अलग धर्म, जाति, परंपराओं के लोग मिल–जुलकर रहते हैं। भारत सभी क्षेत्रों में आगे हैं। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा, खेल और कृषि के क्षेत्र में भारत तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। पर इतना सब होने के पर भी हमारे भारत में एक ऐसी समस्या है, जो सभी मान्यताओं और तरक्की पर प्रहार कर रही है–''भ्रष्टाचार''

भ्रष्टाचार एक आम समस्या है जो हमारे देश में दशकों से एक बीमारी की तरह जड़ें जमा चुकी है। सबसे गरीब से लेकर सबसे अमीर तक भ्रष्टाचार के प्रभाव को हम देख सकते है। अपनी इच्छाओं और उन्नति के लिए दूसरों को संकट में डालने पर भी कोई देर नही करता है। भारत में प्राकृतिक संसाधन, मानव बल के साथ भौतिक संसाधन होने के बाद भी देश के विकास में भ्रष्टाचार एक दीमक की तरह लग गया है। इससे देश में गरीबी और लाचारी ही नहीं, बल्कि कुछ नए संकट भी आ रहे हैं। रिश्वत का लेन–देन, गबन, घोटाला, चुनाव में धांधली, नागरिकों द्वारा टैक्स चोरी, घूसखोरी, राशन में मिलावट आदि भ्रष्टाचार के सामान्य उदाहरण है।

एक व्यक्ति की जन्म से लेकर मृत्यु तक की बातें हम देख जाएँ तो सभी पर भ्रष्टाचार की एक लंबी रेखा हम देख सकते हैं। बच्चे के पैदा होने पर डॉक्टर से लेकर कंपॉड़र तक को भी पैसा देना पड़ता है। अस्पताल की बात कही जाए तो बड़े से लेकर छोटे टेस्ट का नंबर लेने के लिए आज रिश्वत देनी पड़ रही है। बच्चा जब बड़ा हो जाता है तो स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक हमें पैसों के भंडार से ही प्राप्त होती है। अच्छे नंबर पर आने वालों को भी अब पैसा देकर सीट हासिल करना पड़ रहा है।

नौकरी की बात भी कुछ अलग नहीं है। आज सरकारी नौकरी भी ''बाज़ार में बिक्री सामान'' की तरह हो चुका है जिसे किसी भी अच्छे दाम देकर खरीदा जा सकता है। कुछ ऐसे भी लोग है जो 'जानने वालों' को नौकरी देने पर तत्पर हैं।' समाज के सभी क्षेत्रों में हमें भ्रष्टाचार देखने को मिल रहा है। इसकी रोकथाम के लिए एक अच्छी और स्वस्थ राजनीति की ज़रूरत है, पर यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि हमारे भारत की राजनीति भी रिश्वत घोटालों में डूबी हुई है।

'लकड़ी के कीड़े पूरी कुर्सी खा जाते हैं और कुर्सी के कीड़े पूरा देश'

आज की राजनीति में कुछ ऐसे लोग हैं जो अपनी जेब को मोटा करने के लिए निकल पड़े है। पिछले दस वर्षों से हम बहुत सारी घोटालों और घटनाओं से जूझे है। उसे देखकर हम राजनीति में हो रहे भ्रष्टाचार को देख सकते है।

हमें इन सबको खत्म करने के लिए अपने आप में कुछ काम करना पडेगा। बहुत सारे ऐसे नियम है जिनसे हम इस भ्रष्टाचार को रोक सकते हैं, जैसे भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988, मनी लांडरिंग का रोकथाम अधिनियम 2002, केंद्रीय सतर्कता आयोग अधिनियम 2003 आदि ऐसे नियमों के बल पर हम भ्रष्टाचार को रोक सकते हैं। "यह धरती हर एक की ज़रूरत को पूरा कर सकती है लेकिन किसी के भी लालच को नहीं"।

महात्मा गाँधी की यही बात मन पर रखकर हमें चलना चाहिए। भ्रष्टाचार रोकने के लिए भारत की युवा पीढ़ी को आगे आना है। सभी लोग को यह शपथ लेनी है कि आज से हम किसी भी तरह का भ्रष्टाचार नहीं करेंगे और न करने देगें। हम सबको यह बात को मन में रखना है कि

"इंसान की नाजायज़ कमाई का लाभ कोई भी उठा सकता है लेकिन उसके कर्मों का फल उसे स्वयं ही भुगतना पड़ता है।"

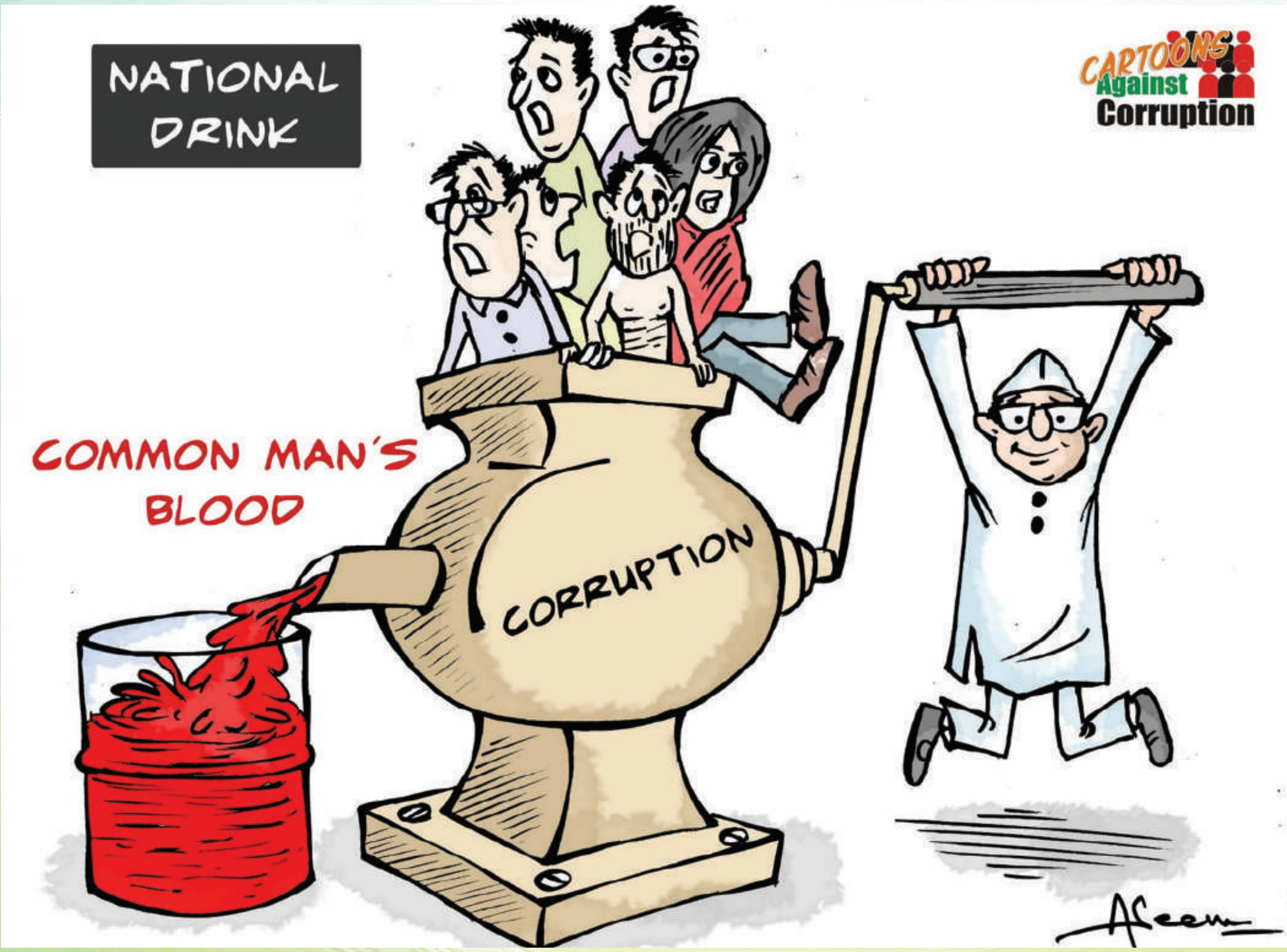

हिंदी के प्रगामी प्रयोग के लिए सहायक ई-टूल्स

विजयलक्ष्मी
वी.यु, हिंदी अनुवादक

राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को और सुगम बनाने के लिए केंद्र सरकार ने कुछ ई–टूल्स विकसित किए हैं। केंद्रीय सरकार के दस्तावेज़ो को गूगल में अनुवाद करना उचित नहीं है। इसलिए अपने कार्यालयीन कामकाज में भारत सरकार द्वारा विकसित निम्नलिखित टूल्स का भरपूर उपयोग करें।

अनुवाद के लिए सहायक ई–टूल्स

कंठस्थ 2.0

कंठस्थ 2.0 एक अनुवाद टूल है जिसे राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य हिंदी और अंग्रेजी के बीच अनुवाद को सरल और सटीक बनाना है। इसमें अनुवाद के अलावा शब्दकोश, दस्तावेजों को सुरक्षित रखने एवं शेयर करने की भी सुविधा है।

आप इसे www.kanthasth.rajbhasha.gov.in से प्राप्त कर सकते हैं। इसको उपयोग करने के लिए पहले पंजीकरण करना अनिवार्य है। इसकी टूटोरियल वीडियो भी इस वेबसाइट में उपलब्ध है। यह सरकार द्वारा नियंत्रित ऐप्लिकेशन होने के कारण आपके डेटा को सुरक्षित रखेगा।

अनुवादिनी

अनुवादिनी एक मशीन अनुवाद सॉफ्टवेयर है जिसे सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ़ एडवांस्ड कंप्यूटिंग (C-DAC) ने विकसित किया है। यह टूल अंग्रेज़ी से हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद करने में मदद करता है। यह https://anuvadini-aicte-india.org/ पर उपलब्ध है। इसमें बुजी, चुट्की, आनंता, वीडियो अनुवाद, शब्दकोश जैसे विभिन्न विशेषताएँ हैं।

मंत्र राजभाषा

मंत्र राजभाषा एक मशीन साधित अनुवाद सिस्टम है, जो प्रशासनिक, सूचना प्रौद्योगिकी, वित्तीय, उद्योग, स्वास्थ्य, कृषि, रक्षा, बैंकिंग क्षेत्रों के दस्तावेज़ों का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करता है। यह एप्लिकेशन सी–डेक, पुणे द्वारा विकसित है। यह सुविधा https://mantrarajbhasha.rb-aai.in पर उपलब्ध है।

भाषिणी

भाषिणी ऐप भारत सरकार की एक पहल है, जिसका उद्देश्य नागरिकों को विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद करने में सहायता प्रदान करना है। इसमें चित्रानुवाद, लेखानुवाद, वेबसाइट का अनुवाद प्लगइन, वाणी अनुवाद आदि करने की सुविधा हैं।

https://bhashini.gov.in/product वेबसाइट में यह सुविधा उपलब्ध है।

शब्दकोश से संबंधित ई–टूल्स

वैज्ञानिक तथा तकनीकि शब्दावली आयोग द्वारा विभिन्न शासकीय विभागों में प्रयोग की जाने वाली

प्रशासनिक शब्दावली विकासित की गई है, जिसका प्रयोग बड़े पैमाने पर शासकीय विभागों, संस्थानों, शोध–अनुसंधान प्रयोगशालाओं, स्वायत्त संस्थाओं तथा सार्वजनिक क्षेत्र की इकाईयों आदि द्वारा किया जाता है।

https://shabd.education.gov.in/lexicon.jsp वेबसाइ में आसानी से शब्द खोज सकते है। इसमें विभन्न विषयों से संबंधित शब्द खोजने की सुविधा है।

वित्तीय शब्दावली खोजने के लिए रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया की वेबसाइट https://shabdavali.rbi.org.in/ पर विजिट करें।

हिंदी शब्द सिंधु

यह राजभाषा विभाग द्वारा विकसित और परिचालित एक बृहद शब्द कोश है। इसमें शब्दों के लिंग एवं विभिन्न भारतीय भाषाओं में इसका उच्चारण भी देवनागरी लिपि में उपलब्ध हैं। इसमें वॉइस टाइपिंग, वर्चुअल की–बोर्ड जैसी विशिष्टताएँ भी उपलब्ध है।

https://hindishabdsindhu.rajbhasha.gov.in/ वेबसाइट में यह सुविधा उपलब्ध है। या http://rajbhasha.gov.in वेबसाइट में जाकर 'हमारे आईटी उत्पाद / our IT products' पर क्लिक करें। उसमें हिंदी शब्ध सिंधु / Hindi Shabdh Sindhu पर क्लिक करें।

हिंखोज

हिंखोज (Hinkhoj) भारतीय कंपनी अंकुर एसोसिएट्स द्वारा विकसित एक हिंदी शब्दकोश और अनुवादक वेबसाइट है। यह वेबसाइट हिंदी भाषा के शब्दों के अर्थ, अनुवाद और अन्य जानकारी प्रदान करती है । इसमें शब्दों के पर्याय, विलोम एवं शुद्ध वर्तनी खोजने की सुविधा है। https://dict.hinkhoj.com/ वेबसाइट में यह सुविधा मुफ्त में उपलब्ध है।

भाषा सीखने में सहायक ई–टूल्स

लीला राजभाषा

यह सभी कर्मचारियों के लिए लाभदायक है जो हिंदी में कार्यालयीय काम करते है और जो हिंदी में ज्ञान अर्जित करना चाहते हैं। लीला एक स्वयं शिक्षण टूल है। यह मोबाइल तथा वेब से कई भाषाओं (अंग्रेज़ी, कन्नड, मलयालम, तमिल, तेलुगु, बंगला, असमी, उड़िया, मणिपुरी, मराठी, पंजाबी, कश्मीरी, गुजराती, नेपाली तथा बोडो) के माध्यम से हिंदी सीखने के लिए निःशुल्क उपलब्ध है।

मोबाइल फोन में गूगल प्ले स्टोर से लीला राजभाषा एप डाउनलोड कर सकते है। इसका वेब वर्जन http://rajbhasha.gov.in या http://lilappp.rb-aai.in पर निःशुल्क उपलब्ध है। http://rajbhasha.gov.in वेबसाइट पर जाकर 'हमारे आईटी उत्पाद / our IT products' पर क्लिक करें। उसमें हिंदी स्वयं शिक्षण – लीला प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ / self learning Hindi-LILA Prabodh, Praveen and Pragya पर क्लिक करें।

ऑनलाइन अनुवाद प्रशिक्षण

केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, केंद्र सरकार के स्तर पर असांविधिक प्रक्रिया साहित्य के अनुवाद और अनुवाद कौशल–विकास के प्रशिक्षण देने की एकमात्र मानक संस्था है। वर्ष 1973 से अनुवाद प्रशिक्षण का कार्य ब्यूरो को सौंपा गया तत्पश्चात् यह संस्थान अनुवाद प्रशिक्षण देने का कार्य भी करता है। उनकी वेबसाइट http://ctb.rajbhasha. gov.in पर ई–लर्निंग प्लेटफॉर्म / e-learning platform के अंतर्गत हिंदी प्रशिक्षण वीडियो एवं अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम सामग्री मुफ्त में उपलब्ध है।

ई सरल वाक्यकोश

भारत सरकार के राजभाषा विभाग ने दैनिक कार्यालयीन कार्य में सहायक सरल हिंदी वाक्यकोश का निर्माण किया है। यह भी http://rajbhasha. gov.in वेबसाइट पर निःशुल्क उपलब्ध है। http://rajbhasha.gov.in वेबसाइट में जाकर 'हमारे आईटी उत्पाद / our IT products' पर क्लिक करें। उसमें 'ई–सरल हिंदी वाक्यकोश / e saral sentences' पर क्लिक करें।

സായന്തനം

ആഭ
സയന്റിഫിക് അഡ്മിനിസ്ട്രേറ്റീവ്
അസിസ്റ്റന്റ്

ചക്രവാള സീമയിലെങ്ങോ
പകലിൻ കിനാക്കൾ മറയവേ
അനന്തമാം സന്ധ്യയുണർന്നു വാനിൽ
രാവിനെ സ്വാഗതമോതുകയാണോ
രക്തവർണ്ണിത സായന്തനം.

പ്രകാശമാനമാം പകലിൻ രശ്മികൾ
സായന്തനത്തിൻ വാതിൽ കടന്ന്
രാത്രിതൻ ഇരുട്ടറയിലേക്കെത്തുന്നു.
മാനുഷ ജന്മത്തിനുണ്ടീ വിധം
ശാശ്വതമാം ജീവിത സായന്തനം.

യൗവനത്തിൻ തീക്ഷ്ണ പകൽക്കാലം കഴിഞ്ഞ്
വാർദ്ധക്യ സായാഹ്ന വാതിലും പിന്നിട്ടവൻ-
മൃത്യുതൻ ഇരുട്ടറയിലേക്കെത്തുന്നു.
ഈ വിധം കൊഴിയുന്നൊരീ ഓരോ സായന്തനങ്ങളു-
മെൻ ജീവിത സായാഹ്ന ദൈർഘ്യം കുറയ്ക്കുന്നു.

പക

എൽദോസ് കുര്യാക്കോസ്
ടെക്നിഷ്യൻ ഗ്രേഡ് ബി

അയ്യടാ.. ആദ്യായിട്ടാ നാട്ടിലൊരു നായരു മരിക്കണത്, ഇക്കൂട്ടരു നാട്ടില് കുറവായോണ്ടൊരു പൂതി ശവം ദഹിപ്പിക്കണത് ഒന്നു കാണണം ...കാലംകുറെ ആയില്ലേ എന്നാലും ആ പക മനസീന്നു പോണില്ല.......ആ നായരാ മരിച്ചൂന്നു കേൾക്കണത്.

പണ്ട് ഒരു കർക്കിടകമാസത്തിലെ മഴക്കാലം സ്കൂൾവിട്ടു വരുമ്പോ പെരുത്ത മഴ, കൂടെവന്ന പിള്ളേരെല്ലാം കൂടെ ചിറമേലെ അബ്ദുവിന്റെ ചീട്ടിതുണികൊണ്ടുള്ള കൂടാരംപോലുള്ള കുടക്കുചുറ്റും കസേരകളി തുടങ്ങി, ചിറമേൽ അബ്ദുവിനു മാത്രമാണ് അന്ന് ഒരു കുടയുണ്ടാർന്നത്. ചെലപ്പോതോന്നും ആ മഴ അബ്ദുവിനുവേണ്ടി മാത്രം പെയ്തതാരുന്നു എന്ന് കാരണം അന്നാണ് റോസ്മേരി ആ കുടയിൽ കേറിപ്പറ്റിയത്. അതും അബ്ദുവിന്റെ കക്ഷത്തിൽ. പിന്നെ അവൾ അവിടെ നിന്നും ഇറങ്ങിയില്ല. കാലം അവളെ റോസ്മേരി അബ്ദുവാക്കി മാറ്റി.

ഞാനും കുമാരന്റെ മകൻ സതീശനും കൂടി മഴയ്ക്ക്മുന്നേ ഓടി ,പക്ഷേ മഴ ഞങ്ങളെതോൽപ്പിച്ച് കവണിമലയും കടന്നു തമിഴ്നാട്ടിലേക്ക് പോയി, ഞങ്ങൾ നനഞ്ഞൊട്ടി ഈ നായർടെ കടത്തിണ്ണേല് ഒന്ന്കേറിനിന്നു, നായരുടെ കടയിലെ നിരത്തിവെച്ച ചില്ലുമുട്ടായി ഭരണികൾക്കു പിന്നിൽ ഞങ്ങളുടെ തലകളൊളിച്ചു. പക്ഷേ സതീശന്റെ കണ്ണുകൾക്കു നേരെ ഒരു അഞ്ച്പൈസയുടെ എള്ള്മുട്ടായീന്റെ പാത്രം ഞെളിഞ്ഞിരുന്നു. അവന്റെ കൃഷ്ണമണികൾക്കും എള്ള്മിട്ടായിക്കും ഒരേനിറം. ദാരിദ്ര്യം കലർന്ന മണ്ണിന്റെ മുഷിഞ്ഞനിറം. അവന്റെ വായിലെ വെള്ളം കർക്കിടക മഴതുള്ളികൾക്കൊപ്പം താടിവഴി ഒഴുകി നെഞ്ചിൽ ചേർത്തുപിടിച്ച പുസ്തകങ്ങൾക്കിടയിലേക്കു മാഞ്ഞുപോയി. മഴ കനക്കുന്നതിനൊപ്പം

സതീശനും എള്ളുമിട്ടായിയും തമ്മിലുള്ള പോരാട്ടം കൂടുതൽ ശക്തമായി. ഒരു മോഷണം നടക്കുമെന്ന് എനിക്കേതാണ്ട് ഉറപ്പായി. ഞാൻ വിലക്കാൻ പോയില്ല

...എന്റെ കൊതി അതിനു സമ്മതിച്ചുമില്ല. അങ്ങനെ ആ പൊരിമഴയത്തു സതീശൻ എനിക്കും കൂടി വേണ്ടി നായരുടെ എള്ളുമിട്ടായി പാത്രം തുറന്നു കുഞ്ഞി കൈ നിറച്ചുവാരി. എന്റെയും അവന്റെയും കണ്ണുകൾക്ക് ഒരേനിറമായി. അടുത്തപണി തിരിഞ്ഞു നോക്കാതുള്ള ഓട്ടമാണെന്നു ഞാനുറപ്പിച്ചു. ഞാൻ ഒരു ചുവടുവെച്ചു ..സതീശൻ അനങ്ങുന്നില്ല. ഞാൻ വീണ്ടും ചുണ്ടനക്കി പറഞ്ഞു ഓടെടാ.. ..സതീശന് അനക്കമില്ല. പക്ഷേ അവന്റെ കണ്ണുനിറഞ്ഞു വരുന്നുണ്ട്. അല്ല നിറഞ്ഞൊഴുകുവാണ്. കൈ അനക്കാൻ പറ്റുന്നില്ല ....അത്ര ബലത്തിലാണ് നായരുടെ പിടി. ചെവിയിലെ പൂട ഒക്കെ വിറച്ചുകൊണ്ടാണ് നായരുടെ അട്ടഹാസം.

കള്ളൻ..കള്ളൻ ......ആള് കൂടി തുടങ്ങി ..മഴേം ..

സതീശന്റെ കൈ ഇപ്പോഴും മുട്ടായി ഭരണിക്കകത്താണ് ..അവന്റെ കരച്ചിൽ വായിൽനിന്നും പുറത്തേക്കു തെറിച്ചു മഴക്കൊപ്പം ആടാൻതുടങ്ങി. പിന്നൊന്നും ആലോചിച്ചില്ല ഞാൻ ഒരു കല്ലെടുത്തു പിന്നെ നായരേ നോക്കി... സതീശന്റെ കരച്ചിലിനുള്ളിലൂടെ കല്ല്പാഞ്ഞുപോയി എള്ളുമിട്ടായികൾ സ്വതന്ത്രരായി. കൂടെ സതീശനും, നായരുടെ കഷണ്ടിയിൽ വാൽനക്ഷത്രം പോയപോലൊരു നീണ്ടപാട്. നായരുടെ കരച്ചിലിനിനൊപ്പം ...അത്ചുവന്നു നിറഞ്ഞു വന്നു. പിന്നെ മഴക്കൊപ്പം ഒഴുകി.

ആ രാത്രി ഞാനുറങ്ങിയില്ല. സതീശന്റെ വീട്ടിലേക്കു നോക്കി ഇരുന്നു. അപ്പോഴേക്കും സതീശൻ എല്ലാം ഏറ്റെടുത്തു കഴിഞ്ഞിരുന്നു ....രാത്രി വൈകി കുമാരൻ വന്നു ...ഡാ.. ഒരലർച്ചയായിരുന്നു കുമാരൻ . ഏറെ താമസിയാതെ അടുക്കളവാതിൽ വഴി ഒരു കരച്ചിൽ ഇറങ്ങി ഓടി വന്നു, എന്റെ വീടു വരെ പക്ഷേ ..പിന്നെ ആ കരച്ചിൽ അകന്നു പോകുന്ന പോലെ തോന്നി, കവണിമലയും കടന്നു മഴ കടന്നു പോയി കൂടെ സതീശനും.

കുമാരന്റെ മോൻ സതീശൻ .. കള്ളൻ ...നായരേ എറിഞ്ഞുവീഴിച്ചിട്ടു നാടു വിട്ടു കള്ളൻ ...അത് കേൾക്കുമ്പോഴൊക്കെ പെരുത്തു വരും.

അന്നു തുടങ്ങീതാണ് ഈ പക.....

നായര് തീയിൽ കിടന്നു പുളയുന്നത് കാണണം.. തലയോട്ടി പൊട്ടി തെറിക്കണതും കാണണം.

ഞാൻ സകലദേഷ്യവും അടക്കിപ്പിടിച്ച് വെട്ടിയ മാവിന്റെ പുറകിലൂടെ നായരെനോക്കി. എല്ലാരും കരയണുണ്ട്...ഞാനൊഴികെ, എള്ളും അരീം കൂടെ കുഴച്ചു വായ്ക്കരിയൊക്കെ ഇട്ടേച്ച് ഇന്ദുചേച്ചി കുട്ടോളെ ചേർത്ത് പിടിച്ച് ഒറ്റ ഇരിപ്പാണ്. നായര് മുറ്റത്തു ഒരു വല്ല്യ ഇലയിൽ നീണ്ടുനിവർന്നു കിടക്കുവാണ്. വെട്ടിയിട്ട മാവിൻതടി അലുവക്കഷ്ണം പോലെ പൊട്ടിച്ചെടുക്കുവാണ് ഗോവിന്ദൻ, കൂടെ ശിശുപാലേട്ടനുമുണ്ട്. ഈ

മൂപ്പറാണ് നാട്ടിൽ ഇത്യാദി പരിപാടികൾക്കൊക്കെ ഒരു പൊതുസഹായി. ഓരോ മരണങ്ങൾക്കും ശിശുപാലേട്ടന്റെ വക ഓരോ കഥകളും കാണും.

എണ്ണി പറഞ്ഞുള്ള കരച്ചിലുകൾക്കു നടുവിൽ നായരുടെ അടുത്ത് സാവിത്രിയേടത്തി തളർന്ന് ഒരു ബെഞ്ചിൽ ഇരിക്കുന്നുണ്ട്. എവിടുന്നോ ഒരു ടെമ്പോ ട്രാവെലർ വന്നു നിന്നു.

നേരിയതൊക്കെ പിടിച്ചിട്ടു ഒന്നു രണ്ടു അമ്മമാർ മുറ്റത്തേക്കിറങ്ങി. അവരെ കണ്ടതും സാവിത്രിയേടത്തിയുടെ കരച്ചിൽ ഉച്ചത്തിലായി.

ശെടാ!!... ഈ നായരോട് ആൾക്കാർക്ക് ഇത്ര ഇഷ്ടമോ? ...അതോ ഇഷ്ടമുള്ളൊരു മാത്രമേ നായരെ കാണാൻ വന്നിട്ടുള്ളൂ?... എന്തോ കൂട്ടകരച്ചിലുകൾക്കിടയിൽ എന്റെ സന്തോഷം മുങ്ങിപ്പോയി.
എന്നാലും ദഹിപ്പിക്കുന്നതു ഒന്ന് കാണണം.

താഴെ തൊടിയിൽ ശിശുപാലേട്ടൻ വിറകുമുട്ടിയൊക്കെ അടുക്കി ചിതയൊരുക്കുന്നുണ്ട് കൂടെ ചെറിയ ഉപദേശവും അതേ "ചിതേന്റെ വടക്ക് ഭാഗത്തുന്ന് ഒന്ന് ഒഴിഞ്ഞ് നിന്നോണേ....
തുറന്നിരിക്കണ ശ്രീകോവിലും എരിയണ ചിതേന്റേം നേരെ നിന്ന് നോക്കരുതെന്നാണ് ശാസ്ത്രം "
ഇതൊന്നും കേൾക്കാതെ ഗോവിന്ദൻ ചിരട്ട വിറകുമുട്ടിക്കു മുകളിൽ നിരത്തി തുടങ്ങി.
സാവിത്രിയേടത്തിയുടെ വലിയ വായിലുള്ള ഒരു കരച്ചിൽ കേട്ടു.
നായരേ മുറ്റത്തു നിന്നെടുത്തു....പെണ്ണുങ്ങൾ ഒഴികെ എല്ലാരും ഇറങ്ങിവരുന്നുണ്ട്.
കരച്ചില് പണ്ടേ പേടിയായ ഞാൻ മുറ്റത്തുന്നിറങ്ങി ഒരു കയ്യാലമേൽ കേറി നിന്നു അവിടിരുന്നാൽ എല്ലാം കാണാം ...
തറവാട്ടിലെ ആണുങ്ങളെല്ലാം കൂടി നായരേ തോളിലേറ്റി. ചന്തു നായരാണ് മുന്നിൽ. നായരുടെ തല ചന്തുനായരുടെ തോളിലാണ്. ഞാൻ അന്തം വിട്ടുപോയി. ഈ ചന്തുനായരെ, ഇങ്ങേരു വീട്ടിൽ കേറ്റില്ലാത്രേ എന്നിട്ടിപ്പോ എന്താ കിടപ്പ് .ഒരു ദേഷ്യവുമില്ല ഒന്നുമില്ല. ചന്തു നായരുടെ കണ്ണിലുമുണ്ട് പൊട്ടാൻ പാകത്തിന് ഒരു തുള്ളി. ചിലപ്പോ മരിക്കുമ്പോ എല്ലാർക്കും ക്ഷമിക്കാൻ പറ്റുമായിരിക്കും. എന്തോ എനിക്ക്പറ്റണില്ല....
ഞാനിരിക്കണ കയ്യാലേന്റെ താഴെക്കൂടിയാണ് നായരേ കൊണ്ടുപോയത്. പൊക്കത്തിൽ നിന്നു ഞാൻ നായരേ നോക്കി. അഞ്ചാറു കൊല്ലം കൂടിയാണ് നായരെ നേരിട്ടു കാണണത്.

ഞാൻ കല്ല്കൊണ്ടു തീർത്ത ആ പഴയ വാൽനക്ഷത്രത്തിന്റെ പാട് ഇപ്പോഴും നെറ്റിയിലുണ്ട്.
നായരോടല്പം സഹതാപം തോന്നിയില്ലെന്നൊരു സംശയം ... വേണ്ട . അതു വേണ്ട ഇയാള് കാരണമാണല്ലോ സതീശൻ നാട്ടു വിട്ടത്. നായരിപ്പോഴും എന്റെ ശത്രുതന്നെയാണ്.
"ആ തല തെക്കോട്ടാക്കി വെച്ചോ" .... ശിശുപാലേട്ടൻ പറഞ്ഞു. മക്കളും മരുമക്കളുമൊക്കെ തുളഞ്ഞ മൺകലത്തിൽ വെള്ളമെടുത്ത് പയറു നനക്കണപോലെ വട്ടം ചുറ്റിനടന്നു നനക്കുവാണ്. നനഞ്ഞ നായരെന്ന് കേട്ടിട്ടേഉള്ളൂ. അങ്ങനെ അതും കണ്ടു. നായർക്ക് തണുക്കണുണ്ടാവൂല്ലേ എന്നെനിക്കു സംശയം തോന്നി.

മക്കളെല്ലാം കൂടി നായരെ പതിയെ ചിതക്ക് മുകളിലേക്ക് വെച്ചു. ശിശുപാലേട്ടൻ നായരയുടെ മുകളിലേക് വിറകുകൾ അടുക്കി തുടങ്ങി .. ആദ്യം രാമച്ചം മീതെ ചകിരി പിന്നെ കർപ്പൂരം. നായരുടെ ദേഹത്തേക്ക് ഓരോ വിറകു വെക്കുമ്പോഴും എനിക്കെന്തോ നെഞ്ചിനൊരു ഭാരം പോലെ തോന്നി.... ഈ നായർക്കു ശ്വാസം മുട്ടൂല്ലേ..
ചന്തുനായരുടെ മോൻ അനന്തന്റെ കയ്യിൽ ശിശുപാലേട്ടൻ ഒരു കർപ്പൂരതിരി കൊളുത്തികൊടുത്തു, അവൻ അതു നായരുടെ കാൽഭാഗത്തു കൊളുത്തി. അനന്തൻ

കുഞ്ഞിന്റെ കണ്ണിൽ നിന്നും ഒരു തുള്ളി അടർന്നു വീണു. കർപ്പൂരക്കട്ടയിൽ വന്നു വീണ് ആവിയായി. അനന്തൻ കരയണ കൊണ്ടാവും എനിക്കും സങ്കടംവന്നു
ചിത കത്തി തുടങ്ങി. ആൾക്കാർ കുറച്ചൊക്കെ പിന്നോക്കം മാറി നിന്നു. ശിശുപാലേട്ടൻ നെയ്യൊക്കെ ഒഴിച്ച് .. ഉഷാറായി കൂടെ ഉണ്ട്. ശേ ..വരണ്ടാരുന്നു.. ദേഷ്യം ഉണ്ടെന്നുള്ളതൊക്കെ ശരി, നായർക്ക് പൊള്ളണുണ്ടാവൂല്ലേ നായരോട് എല്ലാർക്കും ഇഷ്ടമാണ്. എനിക്കൊഴികെ.. നായർ ശരിക്കും പാവമാർന്നിരിരിക്കാം... എനിക്കറിഞ്ഞു കൂടല്ലോ.
ചിതയിലെ തീ ഉയർന്നു പൊങ്ങി തുടങ്ങി.. നായർക്ക് കത്തു പിടിച്ച് കാണും. ആലോചിക്കുന്തോറും നായരോട് എന്തോ ഒരു ഇത്. ചിതയിലെ തീയ്യൊപ്പം എന്റെ ആധിയും കൂടികൂടി വന്നു. വേണ്ട പോവാം നായര്പുളയുന്നതും തലപൊട്ടി തെറിക്കുന്നതും ഒന്നുംകാണണ്ട. പേടിയും സങ്കടോം ഒക്കെ ചേർന്ന് ഞാൻ വല്ലാണ്ടായി.
കവണിമലയിൽ മഴക്കാർ ഉരുണ്ടുകൂടി അങ്ങിങ്ങായി തുള്ളിവീണു തുടങ്ങി. ചിത പൊരിഞ്ഞു കത്തണുണ്ട്. കൂടെ മഴേം. ...ആൾക്കാരൊക്കെ പോയി. ശിശുപാലേട്ടനും ഒന്നോരണ്ടോ ആളുകൾ മാത്രം. മഴ കനത്തു. ...ഞാൻ കയ്യാലെന്നു ഊർന്നിറങ്ങി അടുത്തുകണ്ട ആഞ്ഞിലി മരത്തിന്റെ ചോട്ടിൽ മഴ
പറ്റാതെ ചേർന്ന് നിന്നു. മഴവെള്ളം വീണ് ചിതയിൽ നിന്നും പുക കൂടിട്ടുണ്ട്.
കരിഞ്ഞ നെയ്യിന്റെ മണം മൂക്കിലേക്കിടിച്ചുകയറി. ഞാൻ ചിതയിലേക്ക് നോക്കി, ചിതയുടെ തലഭാഗത്തുന്നു ഒരു കൊള്ളി അടർന്നു താഴേക്കു വീണു. ഞാൻ പേടിച്ചു തല വെട്ടിതിരിച്ചു.
എനിക്ക് പഴയ കർക്കിടക മഴ ഓർമ്മ വന്നു. ഇപ്പൊ നോക്കിയാ ചിലപ്പോ നായരുടെ തലേം, ഞാനെറിഞ്ഞ പാടും കാണാൻ പറ്റുവാരിക്കും. വേണ്ട നോക്കണില്ല പേടിയല്ല വിഷമമാണ് തോന്നുന്നത്.
രണ്ടുംകൽപ്പിച്ചു ആ ആഞ്ഞിലിമരത്തിന്റെ ചോട്ടിൽ നിന്ന് ഞാൻ നായരോട് പറഞ്ഞു.
"എന്റെ നായരേ എനിക്ക് നിങ്ങളോട്ടു ദേഷ്യം ഇല്ല ...എന്നോട് ക്ഷമിക്കണേ ..."
മഴമൂളലിൽ എന്റെ ഏറ്റുപറച്ചിൽ നായർ കേട്ടോ എന്തോ.... ഇതിനിടയിൽ ..ആഞ്ഞിലി മരത്തിന്റെ കവരപൊത്തിൽ നിന്നും ഒരു ശബ്ദം ..
"എന്നോടുംക്കൂടി.... ക്ഷമിക്കണേ"...
സകല ജീവനും കാലിൽകൂടി ഒലിച്ചു പോണ പോലെ തോന്നി ..ഞാൻ മേലോട്ടു നോക്കി രണ്ടുകണ്ണുകൾ ...
എള്ളുമിട്ടായിയുടെ നിറമുള്ള മണ്ണിന്റെ ദാരിദ്ര്യത്തിന്റെ നിറമുള്ള രണ്ടു കണ്ണുകൾ
എൻറെ സതീശൻ

സന്തോഷത്തിന്റെ പാത

രേഷ്മ .കെ

സയന്റിഫ് അസിസ്റ്റന്റ് ഗ്രേഡ് ബി

ലോകത്തിലെ സകല മനുഷ്യരും ആഗ്രഹിക്കുന്ന ഒന്നാണ് സന്തോഷം. ജീവിതത്തിൽ നേരിടേണ്ടി വന്ന എകാന്തതയാണ് സന്തോഷത്തെ എങ്ങനെ സ്വായത്തമാക്കാമെന്നു എന്നെ ചിന്തിക്കാൻ പ്രേരിപ്പിച്ചത്. നാം എല്ലാവരും തന്നെ സന്തോഷം തേടി അതിന്റെ പിറകെ പോകുന്നു. എന്താണ് യഥാർത്ഥ സന്തോഷം ? എങ്ങനെ സാന്തോഷവാനും , സന്തോഷവതിയും ആവാം ? എന്നൊക്കെ ഉള്ള ചിന്ത ആണ് ഈ ഒരു എഴുത്തിന് ആധാരം.

അന്താരാഷ്ട്ര സന്തോഷദിനം ആചരിക്കുന്നത് മാർച്ച് 20,2024 നു ആണ്. 2012 യിലാണ് അന്താരാഷ്ട്ര സന്തോഷദിനം ആചരിച്ചു തുടങ്ങിയത്.

ഭൂട്ടാൻ സർക്കാർ ജനങ്ങളുടെ സന്തോഷത്തിനാണ് മുൻതൂക്കം നല്കുന്നത് .ഭൂട്ടാൻ സർക്കാരിനെ നയിക്കുന്ന ഒരു തത്വശാസ്ത്രമാണ് ഗ്രോസ് ഡൊമസ്റ്റിക് ഹാപ്പിനസ് (ജിഡിഎച്ച്). ഭൂട്ടാൻ ജനസംഖ്യയുടെ കൂട്ടായ സന്തോഷവും ക്ഷേമവും അളക്കാൻ ഉപയോഗിക്കുന്ന ഒരു സൂചിക ആണ് ഗ്രോസ് ഡൊമസ്റ്റിക് ഹാപ്പിനസ് (ജിഡിഎച്ച്). 2008 ജൂലൈ 18-ന് നിലവിൽ വന്ന ഭൂട്ടാൻ ഭരണഘടനയിൽ ഭൂട്ടാൻ ഗവൺമെൻ്റിൻ്റെ ഒരു ലക്ഷ്യമായി ഗ്രോസ് നാഷണൽ ഹാപ്പിനസ് ഇൻഡക്സ് സ്ഥാനം പിടിച്ചിട്ടുണ്ട്.

സന്തോഷത്തിനും ക്ഷേമകാര്യങ്ങൾ നോക്കുന്നതിനും വേണ്ടി യുണൈറ്റഡ് അറബ് എമിറേറ്റ്സ് യിൽ പ്രതേക ക്യാബിനറ്റ് മന്ത്രി വരെ ഉണ്ട്. സാമൂഹിക നന്മയും സംതൃപ്തിയും, സന്തോഷവുമുള്ള ഒരു സമൂഹം കൈവരിക്കുന്നതിനുള്ള പരിപാടികളും , നയങ്ങളും പദ്ധതികളും നടപ്പിലാക്കാൻ ഈ ഓഫീസ് മേൽനോട്ടം വഹിക്കുന്നു.

വേൾഡ് ഹാപ്പിനെസ്സ് റിപ്പോർട്ട് പരിശോധിക്കുമ്പോൾ ഏറ്റവും സന്തോഷമുള്ള രാജ്യം ഫിൻലൻഡ് ആണ്. 143 രാജ്യങ്ങളടങ്ങിയ വേൾഡ് ഹാപ്പിനെസ്സ് പട്ടികയിൽ 126-ാം സ്ഥാനത്താണ് ഇന്ത്യ. ലോകത്തിലെ ഏറ്റവും വലിയ സമ്പദ്‌വ്യവസ്ഥ / സാമ്പത്തിക ശക്തിയുള്ള രാജ്യമായി ഇന്ത്യ വളരുമ്പോഴും ഇന്ത്യൻ ജനത സന്തോഷത്തിന്റെ കാര്യത്തിൽ പിറകിലാണ് എന്ന് വേൾഡ് ഹാപ്പിനെസ്സ് റിപ്പോർട്ട് കണ്ടാൽ മനസ്സിലാവും.

അസന്തുഷ്ടിയുടെ അടിസ്ഥാന കാരണങ്ങൾ കണ്ടെത്തിയാൽ ഒരു പരിധിവരെ നമുക്ക് സന്തുഷ്ടരായിരിക്കാം. സന്തോഷത്തെ സ്വാധീനിക്കുന്ന നിരവധി ഘടകങ്ങളിൽ ചിലതാണ് ഒരാളുടെ ജനിതകം , ചുറ്റുപാട്, സാഹചര്യങ്ങൾ , ജോലിയുടെ അവസ്ഥ, സാമൂഹിക പദവി, സാമ്പത്തിക നില, സാമ്പത്തിക അസംതൃപ്തി , വിശ്വാസം, ആഗ്രഹം,ചിന്തകൾ , പ്രതീക്ഷ, ഭയം, നിരാശ എന്നിവ.

ശാസ്ത്രീയമായി പറയുകയാണേൽ, നമ്മുടെ ശരീരത്തിലെ ചില രാസവസ്തുക്കൾ , ന്യൂറോട്രാൻസ്മിറ്ററുകൾ ഇവയുടെ അമിതമായ / കുറഞ്ഞ തോതിലുള്ള പ്രവർത്തനം സന്തോഷത്തിന്റെ അളവിനെ നിയന്ത്രിക്കുന്നു. സന്തോഷം നൽകുന്നതിൽ മുഖ്യ പങ്ക്‌വഹിക്കുന്ന ഹോർമോണുകൾ ഡോപ്പാമിൻ , സെറാടോണിൻ, എൻഡോർഫിൻ , ഓക്സിടോസിൻ

എന്നിവയാണ് ഡോപാമിനെ "ഫീൽ ഗുഡ് ഹോർമോൺ" എന്നും വിശേഷിപ്പിക്കുന്നു. നമുക്ക് ഇഷ്ടപെട്ട കാര്യങ്ങൾ അതായത് ഇഷ്ടപെട്ട കളികളിൽ ഏർപ്പെടുമ്പോൾ , ഇഷ്ടപ്പെട്ട ഭക്ഷണം കഴിക്കുമ്പോൾ ,ചില ലക്ഷ്യങ്ങൾ നേടുമ്പോൾ ഈ ഹോർമോൺ നന്നായി പ്രവർത്തിക്കുന്നു. നല്ല ഉറക്കം , നല്ല വിശപ്പ് എന്നിവ നിയന്ത്രിക്കുന്നത് സെറാടോണിൻ ആണ്. വ്യായാമം ചെയ്യുമ്പോൾ, നന്നായി ചിരിക്കുമ്പോൾ വേദനസംഹാരിയായ എൻഡോർഫിനുകൾ സജീവമായി പ്രവർത്തിക്കുന്നു.

ഓക്സിടോസിൻ "ലവ് ഹോർമോൺ" എന്നും അറിയപ്പെടുന്നു. നമ്മൾ സമൂഹവുമായി ഇടപെടുമ്പോൾ , കുടുംബവുമായി ഇടപെടലുകൾ നടത്തുമ്പോൾ, വൈകാരിക സമീപനം, ഇവയൊക്കെ ഈ ഹോർമോണിനെ ഉത്തേജിപ്പിക്കുന്നു.

സന്തോഷവും സങ്കടവും തലച്ചോറിലെ വിവിധ മേഘലകളുമായി ബന്ധപ്പെട്ടിരിക്കുന്നു. സന്തോഷം വെൻട്രോ മീഡിയൽപ്രീഫ്രോണ്ടൽ കോർടെക്സ് , സിങ്കുലേറ്റ് കോർട്ടെക്സ് . ഇൻസുല , ബേസൽ ഗാംഗ്ലിയ (Phan et al., 2002, Vytal and Hamann,20210) എന്നിവയുമായും ദുഃഖം മധ്യഭാഗത്തെ പ്രീഫ്രോണ്ടൽ കോർട്ടെക്സ് (mPFC), ആന്റീരിയർ സിംഗുലേറ്റ് കോർട്ടെക്സ്, ഓർബിറ്റോഫ്രോണ്ടൽ കോർട്ടെക്സ് (OFC), വലത് പോൺസ് എന്നിവയുമായും ബന്ധപ്പെട്ടിരിക്കുന്നു (Arias et al.,2020, Murphy et al.,2003, Ouerchenfani et al.,2021).

സന്തോഷവുമായി ബന്ധപ്പെട്ട നിരവധി സിദ്ധാന്തങ്ങളുണ്ട് . ഒരു നിശ്ചിത അളവിലുള്ള സന്തോഷത്തിനായി നമ്മൾ മാനസികമായി പ്രോഗ്രാം ചെയ്യപ്പെട്ടിരിക്കുന്നു .പോസിറ്റീവ് ആയാലും നെഗറ്റീവ് ആയാലും ജീവിതത്തെ മാറ്റിമറിക്കുന്ന സംഭവങ്ങൾക്കിടയിലും എല്ലാവരും തിരിച്ച് ആ സെറ്റ് പോയിന്റ് യിലേക്ക് മടങ്ങിവരുന്നു എന്ന് സെറ്റ് പോയിന്റ് സിദ്ധാന്തം പറയുന്നു.

ഒരാൾക്ക്, അയാളുടെ അടിസ്ഥാനപരമായ ആവശ്യങ്ങൾ നിറവേറ്റപ്പെടുമ്പോൾ / തൃപ്തിപെടുമ്പോൾ, യുക്തിരഹിതമായ വൈകാരിക അനുഭവം നേരിടുമ്പോൾ സന്തോഷം അനുഭവപ്പെടുന്നു . പോസിറ്റീവ്, നെഗറ്റിവിറ്റി ഇഫക്ടിവിറ്റി തമ്മിലുള്ള ഈ സന്തുലിതാവസ്ഥയിൽ സന്തോഷം പ്രതിഫലിക്കുമെന്നു സ്വാധീന സിദ്ധാന്തം പറയുന്നു.

അമിതമായാൽ അമൃതും വിഷമാണ് . യൂഫോറിയ എന്നത് ഉന്മാദ രോഗത്തിന്റെ ഒരു രോഗലക്ഷണം ആണ് , അതിൽ ഒരു വ്യക്തി അസാധാരണമായ സന്തോഷവും ഉത്സാഹവും അനുഭവിക്കുന്നു

മനഃശാസ്ത്രപരവും ദാർശനികവുമായ ഘടകങ്ങൾ കൂടെ നോക്കുമ്പോൾ,

എപ്പോഴാണ് നാം സന്തോഷിക്കുന്നത് ? ധനശേഖരം കുമ്പാരമായി ഉണ്ടെങ്കിൽ സന്തോഷമാകുമോ? " എന്ത് തൊട്ടാലും പൊന്നായി മാറ്റിയ രാജാവ് വെള്ളം പോലും കുടിക്കാൻ പറ്റാതെ ബുദ്ധിമുട്ടിയ കഥ നിങ്ങൾ കേട്ടിട്ടിലെ? മക്കൾ ഒരു സന്തോഷം ആണോ? അവർക്കു എന്നും നിങ്ങള്ക്ക് സന്തോഷം നൽകാൻ സാധിക്കുമോ? മക്കളുടെ വളർച്ചയുടെ വിവിധ ഘട്ടങ്ങളിൽ മാതാ-പിതാക്കൾ വ്യാകുലരാവാറില്ലേ ?

ഇഷ്ടപെടുന്ന ജോലി അത് നിങ്ങള്ക്ക് സന്തോഷം തരുമോ? നിങ്ങളുടെ വേതനം , പദവികൾ , ജോലി സ്ഥലത്തെ സാഹചര്യങ്ങൾ എന്നിവ നിങ്ങളെ സ്വാധിനിക്കാറില്ലേ?

അപ്പോൾ പിന്നെ ഈ സ്ഥായിയായ സന്തോഷം നൽകുന്നത് എന്താണ് ? സന്തോഷവാനും സന്തോഷവതിയും ആവാനുള്ള പോംവഴികൾ പലതുണ്ട്.

- ദുഖത്തെ ഇല്ലാതാക്കാൻ ശ്രീബുദ്ധൻ നൽകിയ മാർഗമാണ് ആഷ്ടംഗമാർഗങ്ങൾ (ശരിയായ വീക്ഷണം , ശരിയായ സങ്കൽപ്പം, ശരിയായ വാക്ക് ,ശരിയായ പ്രവൃത്തി , ശരിയായ ജീവിതമാർഗം , ശരിയായ പ്രയത്നം , ശരിയായ ചിന്ത ,ശരിയായ ധ്യാനം).
- സ്വാർത്ഥത , അഹങ്കാരം , അത്യാഗ്രഹം ,അസൂയ ഇവ സന്തോഷത്തെ ഇല്ലാതാക്കുന്നു.
- ചിരി , ശാരീരികവും മാനസികവുമായ ആരോഗ്യം പ്രദാനം ചെയ്യും . മനസ്സ് തുറന്നു ചിരിക്കുക , മനസ്സിൽ അടക്കിപിടിക്കാതെ സന്തോഷം പ്രകടിപ്പിക്കുക . ചിരി മാനസിക പിരിമുറുക്കം കുറയ്ക്കുകയും 'NK' സെൽ ന്റെ പ്രവർത്തനം മെച്ചപ്പെടുത്തുകയും ചെയ്യും.
- എല്ലാ മനുഷ്യരും വ്യത്യസ്തരാണ് . ഒരേ കാര്യത്തെ പലതരത്തിലാണ് അവർ നിർവചിക്കുന്നത് . ഒരാളുടെ സന്തോഷം മറ്റുള്ളവർക്ക് സന്തോഷമാകണമെന്നില്ല . മറ്റുള്ളവരെ സന്തോഷിപ്പിക്കാൻ വേണ്ടി നമ്മൾ ശ്രമിക്കേണ്ടതില്ല . നമ്മുടെ മനസ്സിനെ പോസിറ്റീവ് ചിന്താഗതി കൊണ്ട് സന്തോഷിപ്പിക്കുക .നമ്മെ അറിയുക എന്നതാവണം നമ്മുടെ ലക്ഷ്യം. ബാഹ്യ സാഹചര്യങ്ങളെ നിങ്ങള്ക്ക് നിയന്ത്രിക്കാൻ ആവില്ല.

പ്രശസ്ത എഴുത്തുകാരി സുധാമൂർത്തിയുടെ സന്തോഷമന്ത്രങ്ങൾ താഴെ പറയുന്നവയാണ് :

വിനയത്തോടെ നിൽക്കുക , ജീവിതത്തിൽ ഉണ്ടാവുന്ന വെല്ലുവിളികളെ പോസിറ്റീവായി നേരിടുക , ദയ കാണിക്കുക , വർത്തമാനത്തിൽ ജീവിക്കുക , ജീവിതത്തിൽ ഒരു ലക്ഷ്യം കണ്ടെത്തുക , എല്ലാം ലളിതമായി എടുക്കുക , നന്ദിയുള്ളവരാവുക.

"പോസിറ്റീവ് സൈക്കോളജിയുടെ പിതാവ്" എന്ന് വിളിക്കപ്പെടുന്ന മാർട്ടിൻ സെലിഗ്മാൻ സന്തോഷത്തിനെ "ആനന്ദകരമായ ജീവിതം", "നല്ല ജീവിതം", "അർത്ഥവത്തായ ജീവിതം" എന്നി മൂന്ന് മാനങ്ങളിലൂടെ വിവരിക്കുന്നു.

ഏറ്റവും കൂടുതൽ സമയം ആളുകൾ ചിലവഴിക്കുന്നത് ജോലിസ്ഥലത്താണ് അതിനാൽ തന്നെ അവിടെ നിന്ന് ലഭിക്കുന്ന പ്രോത്സാഹനങ്ങളും , പെരുമാറ്റങ്ങളും , പ്രതിഫലങ്ങളും എല്ലാം തന്നെ അവരുടെ സന്തോഷത്തെ ബാധിക്കുന്നതിൽ നിർണായക പങ്കുവഹിക്കുന്നു . ജീവനക്കാരുടെ ക്ഷേമം കുറയുന്നത് സ്ഥാപനത്തെയും , സമൂഹത്തെയും പ്രതികൂലമായി ബാധിക്കുമെന്നു പഠനങ്ങൾ തെളിയിച്ചിട്ടുണ്ട്. നമ്മുടെ സ്ഥാപനത്തിനും അധികാരികൾക്കും ജീവനക്കാരിൽ സന്തോഷം ചെലുത്താൻ സാധിക്കും . അതിനു ഒരു ഉദാഹരണമാണ് നമ്മുടെ സ്ഥാപനത്തിൽ രൂപീകരിക്കപ്പെട്ട എൻസെസ് റീക്രീഷൻ ക്ലബ്. ജീവനക്കാരിൽ മാനസികവും , ശാരീരികവുമായ ആരോഗ്യം മെച്ചപ്പെടുത്തുന്നതിന് വേണ്ടി എൻസെസ് റീക്രീഷൻ ക്ലബ് പല പരിപാടികളും നടത്താറുണ്ട് .

विश्व हिंदी दिवस 2024

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र (एनसेस), तिरुवनंतपुरम में वर्ष 2024 के दौरान विश्व हिन्दी दिवस का आयोजन 10 जनवरी 2024 को हुआ।

विश्व हिन्दी दिवस समारोह का उद्घाटन डॉ. डी. बाला सुब्रहमण्यम, वैज्ञानिक "एसजी" एवं प्रधान, एनएएम शाखा, विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र, तिरुवनंतपुरम द्वारा किया गया।

श्रीमती जया आर., उप प्रबंधक, पी एंड जीए को विशेष प्रोत्साहन योजना के तहत 3000 रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान करते हुए।

श्रीमती स्मिता विजयन, कार्यकारी, पी एंड जीए, को विशेष प्रोत्साहन योजना के तहत 2000 रुपये की नकद पुरस्कार राशि प्रदान करते हुए।

श्रीमती अंजू के. एस., कनिष्ठ कार्यकारी, पी एंड जीए, को विशेष प्रोत्साहन योजना के तहत 3000 रुपये की पुरस्कार राशि प्रदान करते हुए।

हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा-2024

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र (एनसेस), तिरुवनंतपुरम में वर्ष 2024 के दौरान हिन्दी पखवाड़े का आयोजन 23 सितंबर 2024 से 4 अक्तूबर 2024 तक किया गया।

हिंदी पखवाड़ा में आमंत्रित मुख्य अतिथि डॉ. डी. डी. ओझा द्वारा हिंदी पखवाड़ा 2024 का उद्घाटन एवं एनसेस के निदेशक प्रो. एन वी. चलपति राव द्वारा अध्यक्षीय भाषण।

हिंदी पखवाड़ा 2024 का समापन समारोह में आमंत्रित मुख्य अतिथि प्रो. सत्यपाल शर्मा, हिंदी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय द्वारा भाषण एवं एनसेस के निदेशक प्रो. एन वी. चलपति राव द्वारा अध्यक्षीय भाषण।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन।

हिंदी पखवाड़े के तहत आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण

हिंदी निबंध लेखन

प्रथम पुरस्कार – अजित एस.

द्वितीय पुरस्कार – अश्वती वी. के.

तृतीय पुरस्कार – राजलक्ष्मी आर.

सांत्वना पुरस्कार – सिबा मनोहर

हिन्दी कविता पाठ

प्रथम पुरस्कार – डॉ. उपासना बैनर्जी

द्वितीय पुरस्कार – अश्वती वी. के.

तृतीय पुरस्कार – अल्फिया सक्कीर हुजैन

सांत्वना पुरस्कार – नयना वि. हरिदास

सांत्वना पुरस्कार – राजलक्ष्मी आर.

हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार – अल्फिया सक्कीर हुजैन

द्वितीय पुरस्कार – डॉ उपासना बैनर्जी

तृतीय पुरस्कार – उत्पल माजी

सांत्वना पुरस्कार – श्रीलेश आर .

सांत्वना पुरस्कार – सिबा मनोहर

हिन्दी टिप्पण और प्रारूपण

प्रथम पुरस्कार – अंजु के. एस.

द्वितीय पुरस्कार – उत्पल माजी

तृतीय पुरस्कार– अजित एस.

सांत्वना पुरस्कार – अन्जू लाल

सांत्वना पुरस्कार – विबिन गोविन्द ए.

हिन्दी श्रुतलेख

प्रथम पुरस्कार – अंजु के. एस .

द्वितीय पुरस्कार – अल्फिया सक्कीर हूजैन

तृतीय पुरस्कार – अजित एस.

सांत्वना पुरस्कार – सिबा मनोहर

विशेष पुरस्कार योजना

अंजु के. एस .

स्मिता विजयन

एनसेस के कर्मचारी श्री एन. निशांत द्वारा बनाया गया चित्र

वर्ष 2024 के दौरान संस्थान में आयोजित अन्य गतिविधियाँ

डॉ. वी. नंदकुमार, निदेशक (प्रभारी), एनसीईएसएस, ने 75वें गणतंत्र दिवस समारोह के अवसर पर राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र परिसर में राष्ट्रीय ध्वजारोहण किया।

संस्थान में मुख्य अतिथि प्रो. रेनी एम. बोर्जेस के साथ विश्व पर्यावरण दिवस समारोह का आयोजन

प्रो. अनिल के. गुप्ता के साथ 10 जून, 2024 को संस्थान में विश्व महासागर दिवस का आयोजन

एनसेस के निदेशक प्रो. एन. वी. चलपति राव द्वारा संस्थान के वैज्ञानिकों और कर्मचारियों को "विकसित भारत का मंत्र, भारत हो नशा से स्वतंत्र" थीम को अपनाते हुए "नशा मुक्त भारत अभियान" प्रतिज्ञा दिलाई गई।

प्रो. एन. वी. चलपति राव, निदेशक, एनसेस, ने 78वें स्वतंत्रता दिवस समारोह के अवसर पर राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र के परिसर में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

अंतर्राष्ट्रीय तट सफाई दिवस के उपलक्ष्य में एनसेस के निदेशक प्रो. एन. वी. चलपति राव द्वारा कोवलम बीच, केरल में आयोजित तट सफाई अभियान का उद्घाटन किया गया।

एनसेस के आंतरिक शिकायत समिति द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से महिला कर्मचारियों के लिए एक आत्मरक्षा कार्यशाला आयोजित किया गया।

डॉ. आर. बिंदु, उच्च शिक्षा और सामाजिक न्याय मंत्री, केरल सरकार, ने केरल राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी संग्रहालय और प्रियदर्शिनी तारामंडल में स्वचालित मौसम स्टेशन (एडब्यूएस) डेटा डिस्प्ले सिस्टम का उद्घाटन किया। एडब्यूएस सिस्टम को राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र (एनसेस), भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय और केरल राज्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी संग्रहालय और प्रियदर्शिनी तारामंडल के बीच एक संयुक्त सहयोग के रूप में लागू किया गया है।

प्रो. रमन सुकोमार के साथ संस्थान में विश्व पशु दिवस का आयोजन

संस्थान में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

प्रो. एन. वी. चलपति राव, निदेशक ने सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती मनाने हुए राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय प्रतिज्ञा का संचालन किया।

केरल पुलिस के आईजीपी और पुलिस आयुक्त, श्री जी. स्पार्जन कुमार, आईपीएस के साथ निवारक सतर्कता अभियान का आयोजन।

एनसेस के कर्मचारियों एवं शोध छात्रों द्वारा सतर्कता निवारक पर 'तीन महीने के अभियान' के तहत कनककुन्नु पैलेस, कोवडियार, तिरुवनंतपुरम में 'सड़क नाटक' आयोजित किया।

प्रो. एन. वी. चलपति राव, निदेशक ने वट्टवाड़ा, मुन्नार क्रिटिकल जोन ऑब्जर्वेटरी (CZO) में स्थापित एडी कोवैरीअंस सिस्टम और कोसमोस सोइल मोइस्चर स्टेशन का उद्घाटन किया। मुन्नार CZO, राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र द्वारा स्थापित टेरैन नेटवर्क के हिस्से के रूप में कार्य करता है, जिसमें अन्य दो केंद्र अट्टप्पडी (पालक्काड जिला) और अदुथुराई (तंजावुर जिला) में स्थित हैं।

एनसेस के कर्मचारियों के बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र

निरुपमा किरण, कक्षा 1, पुत्री, श्रीमती लक्ष्मी जी.

नेहल पी., कक्षा 1, पुत्री, श्री निशांत एन.

कल्याणी बाबुराज, कक्षा 5, पुत्री, श्रीमती स्मिता विजयन

पार्वती सुधीर, कक्षा 6, पुत्री रासी पी. सी.

विश्वनाथन एम. एस, कक्षा 7, पुत्र, श्रीराज एम. के.

एनसेस के कर्मचारियों द्वारा बनाए गए चित्र

निशांत एन.

विजयलक्ष्मी वि. यु.

राष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान अध्ययन केंद्र,
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, तिरुवनंतपुरम-695011
दूरभाष 0471 2511502 , 2511532 फैक्स 0471 2442187